मध्यप्रदेश का प्रागैतिहासिक काल (History of M.P.)

इस काल में मानव द्वारा कोई लिखित विवरण प्राप्त नहीं हुआ, अर्थात् मनुष्यों ने पत्थरों के उपकरण एवं औजार निर्मित किये एवं खानावदोश जिंदगी गुजारता रहा।

मध्यप्रदेश में एतिहासिक स्थलों पर उत्खनन व शोध के उपरांत प्राप्त हुये उपकरणों की बनावट के आधार पर प्रागैतिहासिक काल को निम्नानुसार बांटा जा सकता है-

1. पाषाण काल 2. ताम्र-पाषाण काल 3. लौह युगीन सभ्यता

1. **पुरा पाषाण (2.5 लाख-10000 ई. पू.):-** इस काल में बिना बैअ के औजार (हस्तकुठार) प्रमुख थे।

इस काल को पुनः तीन भागों में बांटा गया है।

I. **निम्न पुरापाषाण काल/ नर्मदा घाटी सर्वेक्षण (2.5 लाख-50000BC)**

- सर्वेक्षण - एच.डी. सांकलिया, मैक क्राउन आर. बी. जोशी।
- नर्दनेदसिस मानव की खोपड़ी के अवशेष ' अथनौरा (सीहोर) से प्राप्त ।
- महादेव पिपरिया (नरसिंहपुर) से सूपेकर महादेय को 860 औजार मिले।
- भीम बेटका व बेतवा घाटी से भी औजारों की प्राप्ति हुयी।
- सोनघाटी से निसार अहमद ने कई उपकरणों की खोज की।
- बी.बी. लाल ने ग्वालियर में व जी. शर्मा ने रीवा, सतना क्षेत्रों में उत्खनन कार्य करवाया। चंबल घाटी (मंदसौर) से वाकणकर महोदय को औजार प्राप्त।

II. **मध्य पुरा पाषाण काल (5000-40000 BC)**

सूपेकर महोदय मण्डला में

- बी.बी. मिश्रा के द्वारा मण्डला में उत्खनन का कार्य सम्पन्न। इस काल के साक्ष्य सोनघाटी, नाहरगढ़, मंदसौर, सीहोर, इंदौर, भीमबेटिका से प्राप्त हुये। सोनघाटी से 464 औजार मिले।

III. **उच्च पुरा पाषाण काल (40000-10000 BC)**

इस काल के उपकरण भीमबेटिका, रीवा, सोनघाटी क्षेत्र शहडोल से प्राप्त हुये है।

IV. **मध्य पाषाण काल (10000-5000 ई. पू.) -**

इस काल से औजारों का आकार छोटा होना शुरू हुआ, ये औजार चंबल बेतवा, नर्मदा आदि घाटियों में बहुतायत में मिले। उत्खनन बी.बी. मिश्रा ने करवाया। इनके द्वारा भीम बेटका से 'ब्लेड' उपकरण की खोज की गयी। मध्यपाषाण कालीन आदमगढ़ (होशंगाबाद, नर्मदा तट) प्रागैतिहासिक मानव की क्रीड़ा स्थली रहा है, यहाँ की प्रमुख विशेषता है, गुफा शैल चित्र।

V. **नव पाषाण काल (5000-2500 ई.पू.)-**

इस काल में स्थायी निवास और कृषि के साथ-साथ पशुपालन, गृहनिर्माण, अग्निप्रयोग जैसे क्रांतिकारी कार्यों को मनुष्यों ने अपनाया, जिसके साक्ष्य ऐरण आदमगढ़, जतकारा, दमोह, सागर,जबलपुर आदि स्थलों से प्राप्त हुये। पहिये का आविष्कार एवं मिट्टी के बर्तन बनाने की कला की शुरूआत।

- प्रागैतिहासिक कालीन पनारपानी स्थित मामा-भांजा शैलाश्रय (पंचमढ़ी) से 29 चित्र है।
- प्रागैतिहासिक मानव की कलात्मक अभिव्यक्ति के साक्ष्य भोपाल से 40 किमी. दूर विंध्य पर्वतों में स्थित भीम बेटिका (रायसेन) के शैलाश्रय है। भीम बेटका में ऊँचे-ऊँचे पत्थर के टीलों के मध्य लगभग 500 गुफायें है।

गुहाचित्र या शैलाश्रय-

भारत में जितने शैलाश्रय प्राप्त हुये है, उनमें मध्यप्रदेश में पाये जाने वाले शैलाश्रयों की संख्या सर्वाधिक है। होशंगाबाद, सागर, रीवा, मंदसौर, जबलपुर, सीहोर, रायसेन, ग्वालियर, पूर्वी निमाढ़, शिवपुरी, छिंदबाड़ा, छतपुर, दमोह, पन्ना, नरसिंहपुर जिलों तथा शिवना नदी (मंदसौर) के किनारों पर चित्रित शैलाश्रय मिले है। अधिकांश गुफाचित्रों में लाल, सफेद, काले, नीले एवं पीले रंग का उपयोग किया गया है। गुफा चित्रों में पशु-पक्षियों का शिकार, जानवरों की लड़ाई, मानवों का पारस्परिक युद्ध, पशुओं की सवारी, गीत, नृत्य, पूजन मधुसंचय तथा घरेलू जीवन संबंधी दृश्य है। विदेशी इतिहासकार इनको मात्र 4000 ई.पू. का जबकि सांकलिया 1.50 लाख वर्ष पूर्व का मानते है।

ताम्र पाषाण काल- (2000-900 ई. पू.) -

ताम्र पाषाण काल से तात्पर्य उस कालखण्ड से है जब मानव ने प्रस्तर के साथ तांबा धातु का भी उपयोग शुरू किया।

पहली ताम्र-पाषाण बस्ती। बराह मिहिर की जन्मभूमि -तांबा धातु की कंकण, छेनी और कुल्हाड़ियाँ प्राप्त। तांबा एवं मिट्टी की पशु आकृतियां तथा लाल मृदभांडों पर काले रंग के चित्र प्राप्त हुये।

एरण/ऐरिकिण (सागर)-(2000-700 ई.पू.)-
ताँबे की कुल्हाड़ियां, सोने के गोल टुकड़े, मिट्टी की पशु आकृतियाँ, काले-लाल मृदभांड, चित्रित मृदभांड, ताम्रकालीन बस्ती के प्रमाण मिले।

नवदाटोली (महेश्वर, खरगोन, नर्मदा तट)- (1600 ई.पू. के मध्य)-

- चौकोर,गोल, आयताकार झोपड़ीनुमा मिट्टी के घरों के साक्ष्य।
- सुनियोजित नगर के साक्ष्य।
- चूल्हे, परिवहन की गाड़ी काला-लाल मृदभांड।
- गेहूँ, चना, मटर, मसूर की खेती के साक्ष्य।
- ताँबे और पत्थर के औजार के साथ विदेशियों के अप्रवास के साक्ष्य

अवरा- मंदसौर-

- यहाँ से ताम्रपाषाण से लेकर गुप्तकाल तक की विभिन्न अवस्थायें एवं संबंधित सामग्री मिली है।
- चित्रित लाल-काले- एवं उत्कर्णित मृदभाण्ड।
- यह सभ्यता महेश्वर, नावदाटोली, नागदा आदि ताम्र पाषाण युगीन सभ्यता के समकालीन थी।

डांगवाला -ताम्र पाषाणिक बस्ती जो उज्जैन से 32 किमी. दूर है।

नागदा- उज्जैन, चंबल नदी।

इस ताम्र पाषाण बस्ती से भी मृदभाण्ड और लघुपाषाण के अस्त्र आदि मिले है।

आजाद नगर-इंदौर- मूसाखेड़ी आजादनगर भी ताम्रपाषाणिक बस्ती थी।

खेड़ी नामा -होशंगाबाद -1500 ई. पू. पुरानी ताम्रपाषाणिक बस्ती।

अन्य स्थल - उक्त प्रमुख सभ्यताओं के अलावा म.प्र. में महेश्वर, बेसनगर, उज्जैन, शाजापुर, इंदौर, प. निमाढ़, धार, जबलपुर, भिण्ड़ में स्थिल 30 से अधिक ताम्रपाषाणिक बस्तियों के साक्ष्य मिले है।

ताम्र विधियों में सबसे महत्वपूर्ण विधि बालाघाट जिले में स्थित गंगेरियाल की है।

नोट - वैदिक युगीन संस्कृति (1500-600 ई.पू.) का मध्यप्रदेश में अभाव है।

महापाषाण युग (1700-100 ई.पू.)- दक्षिण भारत के कुछ स्थलों से प्राप्त विशाल पाषाण समाधियों को महापाषाण स्मारक/मंगालिथ कहा जाता है। मध्यप्रदेश के सिवनी और रीवा जिलों में ऐसे स्मारक उत्खनित किये गये है।

लौह युगीन संस्कृति (1000-950 BC से प्रारम्भ):-

लगभग 1000-950 ई.पू. में लौहे की खोज के बाद के काल को "लौह युगीन संस्कृति"या क्षेत्र में लौहे युगीन संस्कृति के साक्ष्य प्राप्त हुये है। चित्रित धूसर-मृदभाण्ड लौहे युग की पहचान है।

वैदिक युग (1500-600 ई.पू.)-

इस काल का आदिग्रंथ ऋग्वेद है। वस्तुतः ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई. पू.) में आर्य संस्कृति उत्तर भारत तक सीमित थी और उत्तर वैदिक (1000-600 ई.पू.) समय में ही उसने विंध्यचल को पार कर मध्यप्रदेश में कदम रखा।

ऐतरेय ब्राह्मण में जिस "निषाद" जाति का उल्लेख ऐतरेय ब्राह्मण, सांख्ययन श्रोतसूत्र एवं शतपथ ग्रंथों के अनुसार विश्वामित्र के 50 शापित पुत्र मालवा आकर बसे, तत्पश्चात् आत्र, भारद्वाज, भार्गव आदि ऋषि भी आये।

- पौराणिक कथाओं के अनुसार 'कारकोट नागवंशी शासक' नर्मदा क्षेत्र के शासक थे। उस समय नर्मदा का नाम 'रेवा' था।
- मौनेय गंधर्वों से जब नागों का संघर्ष हुआ तो अयोध्या के इच्छावाकु नरेश "मांधाता" ने अपने पुत्र "पुरूकुत्स" को नागों की सहायतार्थ भेजा जिसने गंधर्वों को पराजित किया।
- पुरूकुत्स ने 'रेवा' से शादी की और उसका नाम 'नर्मदा' कर दिया।
- मुचुकुन्द (इक्ष्वाकु वंश) ने रिक्ष और परियात्र (विंध्य-सतपुड़ा) पर्वतमालाओं के बीच नर्मदा के तट पर अपने पूर्वज 'नरेश मांधाता' के नाम पर मांधाता नगरी (ओंकारेश्वर) की स्थापना की।

अनुश्रुति पर आधारित इतिहास-

कारूष वंश -अनुश्रुति अनुसार मनुष्यों की परम्परा में अंतिम मनु 'वैवस्वत' हुये जिनके 10 पुत्र थे। इनमें से एक पुत्र 'कारूष' के नाम पर कारूष वंश ने 'कारूष देश' (वर्तमान बघेलखण्ड) पर शासन किया।

चन्द्र वंश (ऐल साम्राज्य)- मनु वैवस्वत की पुत्री इला का विवाह सोम (चंद्र) से हुआ था। इनके राज्य का नाम 'ऐल साम्राज्य' हुआ जिसका आदि पुरूष चन्द्र ही था।

सोम या चंद्र वंश के साम्राज्य का विस्तार 'बुन्देलखण्ड' तक था। सोम (चंद्र/पुरूरूवा) के पुत्र 'आयु व अमावसु' हुआ।

ययाति/ऐल साम्राज्य का विभाजन- राजा आयु की तीसरी पीढ़ी में चंद्रवंशों ययाति हुआ। जिसने देवयानी (शुक्र-भार्गव ऋषि की कन्या) से विवाह किया। ययाति ने अपना 'ऐल साम्राज्य' पांचों पुत्रों में बांट दिया, इस विभाजन में यदु को चर्मावती (चंबल), बेत्रवती (बेतवा) और शुक्तिमति (केन) का घाटी क्षेत्र प्राप्त हुआ और इसके नाम पर यदु या यादव वंश की स्थापना हुयी।

दन्तवक्र नामक दैत्य के नाम पर 'दतिया' राज्य हुआ। श्रीकृष्ण द्वारा परास्त 'दन्तवक्र' 'गोपालकक्ष' हो गये और ग्वालियर की पहाडियों पर आ बसे इससे यह क्षेत्र 'गोपालगिरी' (ग्वालियर) हो गया।

इक्ष्वाकु वंश और दण्डकारण्य राज्य - मनु के एक पुत्र इक्ष्वाकु के नाम पर इक्ष्वाकु वंश की स्थापना हुयी, जिसके पुत्र ने दण्डकारण्य (बस्तर) राज्य स्थापित किया।

मांधाता चक्रवर्ती - इक्ष्वाकु वंश का प्रतापी राजा मांधाता हुआ, जो चक्रवर्ती सम्राट था। इसके एक पुत्र पुरूकुत्स ने मध्यभारत के नाग राजाओं को गंधर्वों के खिलाफ सहायता दी तथा रेवा का नाम नर्मदा कर दिया।

हैह्यय साम्राज्य - यादव वंश के संस्थापक यदु के पौत्र हैह्यय के नाम पर स्थापित हैह्यय राज्य के राजा महिष्मन्त ने एक जीते गये दुर्ग का नाम 'महिष्मति (महेश्वर) रखा। इसके वंशज 'कृतवीर्य' ने हैह्यय वंश के विशाल साम्राज्य को स्थापित किया।

सहस्त्रार्जुन - हैह्यय वंश में ही कार्तवीर्य/अर्जुन/सहस्त्रार्जुन (सहस्त्रबाहु) नामक महान सम्राट हुआ, जिसकी हजार भुजायें मानी गयी। उसने समस्त पृथ्वी को जीता और अनेक यज्ञ किये। उसने लंका के राजा ' रावण' को भी हराया।

राजा अवंति - अर्जुन के पुत्र जयध्वज ने 'अवंति (मालवा) पर राज्य किया। अवंति नाम जयध्वज के पौत्र अवंति नामक राजा के नाम पर बाद में पड़ा। अवंति ने ही यादवों को विदिशा से भगाया था।

महाकाव्य काल

महाकाव्य काल को दो भागों में बांटा जा सकता है -
1. रामायण काल 2 महाभारत काल

1. **रामायाण काल/त्रेतायुग** - रामायाण और महाभारत महाकाव्यों में मध्यप्रदेश के विभिन्न राज्यों, क्षेत्रों और उनकी भूमिका का वर्णन हुआ है।

किवदंती है कि राम ने चित्रकूट में तुलसीदास जी को दर्शन दिये।

वाल्मीकि रामायाण के अनुसार राम ने अपने वनवास का अधिकांश समय दण्डकारण्य (बस्तर) में बिताया। दण्डकारण्य और महाकान्तार घने वनों का क्षेत्र था। यहीं से रावण ने सीता का अपहरण किया था। रावण जिस वंश का राजा था। वह संभवतः जबलपुर के निकट या अमरकंटक के समीप था।

बाल्मीकि आश्रम में निर्वासित माता सीता ने लव-कुश को जन्म दिया। यह टोंस नदी (रामायण में तमसा) तट पर संभावित है, जो अमरकंटक से निकलती है।

भविष्य में कुश ने 'दक्षिण कौशल (छत्तीसगढ़) पर राज्य किया जबकि शत्रुघ्न के पुत्र 'शंभुघाती' ने विदिशा पर इस समय सतपुड़ा और विंध्याचल में निषाद जाति का राज्य था।

महाभारत काल/द्वापर युग-इस युग की महत्वपूर्ण घटना थी 'महाभारत युद्ध'। इस युद्ध में मध्यप्रदेश स्थित अनेक राज्यों ने भाग लिया। इनमें से वर्तमान बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड के क्षेत्रों में अवस्थित राज्यों ने पांडवों की ओर से भाग लिया जिनमें महिष्मति (नील राजा), अवंति, भोज, अधंक विदर्भ, निषध, वृष्णि आदि। मध्यप्रदेश में ही अवस्थित थे। महाभारत में महिष्मति, उज्जैयिनी, कुंतलपुर (मुरैना) विराटपुरी को मध्यप्रदेश के प्रमुख नगर बताये गये है।

महाजनपद युग-

वैदिक काल के अंतिम समय अर्थात् 600 ई. पू. के लगभग भारत में 16 महाजनपद थे, अतः इस काल की महाजनपद काल कहा जाता है। इनमें से दो महाजनपद - चेदि (खजुराहो, बुन्देलखण्ड) और अवंति (उज्जैन) वर्तमान मध्यप्रदेश के क्षेत्रान्तगर्त थे।

चेदि महाजनपद- वर्तमान बुन्देलखण्ड क्षेत्र के पूर्व में विस्तारित, जिसकी राजधानी 'शुक्तिमति' (केन नदी) थी। इसकी एक शाखा कलिंग (ओडिशा) में स्थापित हुयी। खारवेल वहाँ का प्रसिद्ध शासक हुआ। चेदिवंश के राजा 'शिशुपाल' का महाभारत में वर्णन हुआ है, जिसका सिर कृष्ण ने अपने चक्र से काटा था, चेदि बाद में कमजोर पड़ गया

और मगध (महापद्मनंद) ने इसे अपने साम्राज्य में मिला लिया।

अवंति महाजनपद- मध्यप्रदेश के पश्चिमी भाग में एक सशक्त महाजनपद था। अवंति को बौद्ध ग्रंथों में 'अच्युतगामिनी' भी कहा गया है- इसके दो भाग थे- 1. उत्तरी अवंति - राजधानी - उज्जैयिनी। 2. दक्षिणी अवंति - राजधानी - महिष्मति (महेश्वर)

इन दोनों क्षेत्रों के बीच वेत्रवती (बेतवा) नदी प्रवाहित होती थी। अवंति के दो प्रसिद्ध नगर 'कुरधर और सुदर्शनपुर' का वर्णन बौद्ध ग्रंथों में है।

छटवीं शती ई.पू. में अवंति बौद्धों का प्रसिद्ध केन्द्र बन गया था। यहाँ का शासक 'चण्डप्रद्योत' अपनी वीरता के लिये प्रसिद्ध था। इनके पिता पुलिक, जो ब्रहदृथ वंशीय राजा रिपंजय के अमात्य थे, ने रिपुजय को हटाकर 'प्रद्योत' को राजा बनाया था। यह महात्मा बुद्ध का समकालीन था।

चाण्ड प्रद्योत के समय मगध का राजा बिम्बसार था। उसने अपने राजवैद्य "जीवक" को प्रद्योत का इलाज करने पाण्डु रोग भेजा था। प्रद्योत 'हाथी पालन कला' का विशेषज्ञ भी था।

बौद्ध ग्रंथों के अनुसार मगध के दूसरे राजा अजातशत्रु ने प्रद्योत के आक्रमण से सुरक्षार्थ 'पाटलिपुत्र दुर्ग' बनवाया था।

मगध में शिशुनाग वंश ने अवंति को अंततः मगमध में मिला लिया। उस समय यहाँ का शासक 'नंदिवर्धन था।

व्योंथर (रीवा) से बौद्धकालीन स्तूप के खण्डहर मिले है।

नंदवंश -मगध में नंदवंशीय राजा 'महापद्मनंद' ने अपनों साम्राज्य विस्तार नीति के तहत 'चेदि' को मगध में मिला लिया था। बड़बानी से नंद वंश की मुद्रायें प्राप्त हुआ है।

प्राचीन जनपद	नवीन नाम
अवन्ति	उज्जैन
वत्स	ग्वालियर
चेदि	खजुराहो
अनूप	निमाड़(खण्डवा/खरगोन)
दशार्ण	विदिशा
तुंडीकेर	दमोह
नलपुर	नरवर (शिवपुरी)

मौर्यकाल (323-187 ई.पू.)

नंदों के पश्चात् मौर्यवंश का साम्राज्य रहा। मौर्यों के समय भी अवंति और चेदि मगध के भाग बने रहे। सम्राट बिन्दुसार ने अपने पुत्र अशोक को अवंति का प्रांतपति बनाया, जिसने विदिशा की शकवंशी 'श्रीदेवी' या महादेवी (वैश्य की बेटी) से विवाह किया। इससे ही महेन्द्र और संघमित्रा उत्पन्न हुये। इसी अशोक ने सम्राट बनने के उपरांत सांची के प्रसिद्ध स्तूप का निर्माण करवाया। संभवतः महादेवी के लिये भी एक स्तूप उज्जैन में अशोक ने बनवाया था, जिसे आज 'वैश्य टेकरी' के नाम से जाना जाता है।

अशोक के लघु शिलालेख मध्यप्रदेश के रूपनाथ (जबलपुर) गुर्जरा (दतिया),सारू-मारू (सीहोर), सांची (रायसेन) में मिलते है। गुर्जरा लेख में अशोक देवनाम प्रिय, प्रियदस्सी का उल्लेख है। चीनी यात्री फाह्यान के अनुसार बौद्ध धर्म प्रचारार्थ अशोक ने 84 हजार स्तूपों का निर्माण करवाया था।

मौर्ययुग में व्यापारिक मार्गों की संख्या 4 थी, जिनमें तीसरा मार्ग दक्षिण में प्रतिष्ठान (औरंगाबाद, महाराष्ट्र) से उत्तर में श्रावस्ती तक जाता था। जिसमें माहिष्मति, उज्जैन, विदिशा आदि नगर स्थित थे, जबकि चौथा प्रसिद्ध व्यापारिक मार्ग मृगुकच्छ से मथुरा तक जाता था जिसके रास्ते में उज्जैयिनी पड़ता था।

मौर्यकालीन स्तूप

1. **सांची का स्तूप-** सम्राट अशोक द्वारा तीसरी शताब्दी ई.पू. में सांची के बौद्ध स्तूप (रायसेन) का निर्माण करवाया गया था जो मूल रूप से ईंटों से निर्मित था। 1818 ई. में जनरल टेलर ने सांची का स्तूप खोजा था।
2. **तुमैन का स्तूप (गुना)-** तुमैन विदिशा तथा मथुरा को जोड़ने वाला प्रमुख व्यापारिक मार्ग पर स्थित है। यहाँ से तीन मौर्यकालीन बौद्ध स्तूपों के अवशेष मिले है।
3. **उज्जैन का बौद्ध महास्तूप-** सम्राट अशोक द्वारा अपनी पत्नि श्री देवी के लिये उज्जैन में एक विशाल स्तूप का निर्माण करवाया गया था, जिसके अवशेष 'वैश्य टेकरी' (कानीपुरा) नामक टीले के रूप में विद्यमान है।
4. **कसरावद के स्पूत (खरगौन)-** कसरावद में स्थित दूतबड़ी नामक टीले के उत्खनन से 11 मौर्यकालीन स्तूप प्राप्त हुये है।
5. **देउरकोठार के स्तूप (रीवा)**-मौग्रकालीन बौद्ध स्तूप प्राप्त हुये है।
6. **पनगुड़ारिया का स्तूप (सीहोर)-** यहाँ से मौर्यकालीन प्रदक्षिणापथ युक्त स्तूप प्राप्त हुआ है।

प्रमुख स्थान

बेसनगर (विदिशा)- प्राचीन जैन एवं ब्राह्मण ग्रंथों में विदिशा का नाम बेसनगर मिलता है। 1913-14 में श्री डी.आर.भण्डारकर ने यहाँ उत्खनन करवाया। बेसनगर में हेलियोडोरस का स्तम्भ प्राप्त हुआ है, जो वैष्णव धर्म से संबंधित है। यहाँ मौर्यकालीन सभ्यता के भी प्रमाण मिले है। बेसनगर गुप्त शासकों के समकालीन माना जाता है।

साँची (काकनाद बोट)- खोज-1818 (जनरल टेलर) 1818 में 'मेजर कोल' ने स्तूप संख्या 1 को भरवाने के साथ उसके द.प. तोरण द्वारों तथा स्तूप के 3 गिरे हुये तोरणों को पुनः खड़ा करवाया। इस प्रकार यहाँ 3 स्तूप है। इनमें एक विशाल तथा दो लघु स्तूप है।

महास्तूप में भगवान बुद्ध के, द्वितीय स्तूप में अशोक कालीन धर्म के तथा तृतीय में बुद्ध के दो प्रिय शिष्यों सारिपुत्र तथा महामोदग्लायन के दन्त अवशेष सुरक्षित है। स महास्तूप का निर्माण मौर्य सम्राट अशोक के समय में ईंटों की सहायता से किया गया था, उनके चारों ओर काष्ठ की वेदिका बनी थी। अशोक का संघभेद रोकने की आज्ञा वाला अभिलेख यहीं से मिला है। सांची के स्तूप के पास ही अशोक का एक शिलालेख उत्कीर्ण है।

इन स्तूपों का निर्माण सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने के पश्चात् कराया था। 1989 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया।

अशोक ने सांची सहित कुल 84 हजार स्तूपों का निर्माण कराया।

स्तूप संख्या- 2 में अन्य बौद्ध आचार्यो व भिक्षुओं के अस्थि अवशेष थे जो अब लंदन संग्रहालय में है।

मौर्योत्तर युग (200 ई.पू.-150 ई.पू.)/नगरीय युग- मौर्यों के समय अनेक नगर विकसित हुये थे, इनमें एरण (सागर), त्रिपुरी (जबलपुर) महिष्मति (उज्जैन), भागिल विदिशा, अवंति (अवंति (उज्जैयिनी) एवं पद्मावती (पवैया) प्रमुख है। इस समय के आहत सिक्के (पंचमार्क) उपलब्ध हुये है। इन सिक्कों पर ब्राह्मी लिपि में लेख है।

शुंगकाल (184-72 ई.पू.)-शुंग मूलतः उज्जैन के थे और यहाँ मौर्यों की सेवा में रहे। मौर्यों के बाद शुंग वंश ने मगध पर राज किया।

पुष्यमित्र (बृहद्रत का सेनापति) ने 184 ई.पू. में अंतिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ की हत्या कर 'शुंग वंश' की स्थापना की थी, किन्तु पुष्यमित्र मौर्य साम्राज्य का केवल मध्यवर्ती भाग ही प्राप्त कर सके थे, क्योंकि उस समय दक्षिण में 'सातवाहन वंश' तथा कलिंग (उड़ीसा) मं चेदि वंश के प्रभुत्व का विस्तार हो रहा था। पुष्यमित्र का पुत्र अग्निमित्र विदिशा का प्रांतपति था। मालविका के साथ उसके प्रेम प्रसंग को आधार बनाकर कालिदास ने अपनी पहली रचना 'मालविकाग्निमित्रम' लिखी। मालविकाग्निमित्रम के अनुसार अग्निमित्र ने विदर्भ के यज्ञसेन को हराया तथा विदर्भ राज्य के राज्यपाल का कार्यभार अपने मित्र 'माधवसेन' को सौंपा। इन दोनों राज्यों (विदिशा और विदर्भ) की सीमा 'वर्धा नदी' थी।

कुछ विद्वानों ने पुष्यमित्र शुंग को 'स्तूपों का विनशाक' तथा बौद्ध धर्म का संहारक' से भी नवाजा है। सांची (रायसेन) व भरहुत (सतना) से प्राप्त कलाकृतियों के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि पुष्यमित्र शुंग को बौद्ध धर्म का संहारक कहना उचित नहीं होगा क्योंकि इस काल में इन स्थलों के स्तूप न केवल सुरक्षित ही रहे बल्कि इन्हें राजकीय व व्यक्तिगत सहायता भी मिलती रही।

इस वंश का नवाँ शासक 'भागवत या काशीपुत्र भागभद्र था, जिसके दरबार में (इसके शासनकाल के 14 वें वर्ष में) तक्षशिला के यवन नरेश ऐण्टियालकीड्स का राजदूत 'हेलियोडोरस' उसके विदिशा (बेसनगर) स्थित दरबार में उपस्थित हुआ। उसने भागवत् ग्रहण कर लिया तथा विदिशा (बेसनगर) स्थित दरबार में उपस्थित हुआ। उसने भागवत धर्म ग्रहण कर लिया तथा विदिशा के पास बेसनगर (भेलसा) में प्रसिद्ध 'गरूड़ स्तम्भ (खामबाबा) 'ब्राह्मी लिपि' में उत्कीर्ण करवाया और अपने को परम भागवत (भागवत धर्म का अनुयायी) घोषित किया एवं भगवान विष्णु की पूजा की। अग्निमित्र के समय ही सांची स्तूप के आस-पास परिक्रम स्थल (जंगल) निर्मित किया गया।

मध्यप्रदेश में शुंगकालीन कलाकृतियाँ-

भरहूत (सतना)-शुंगों द्वारा ही सतना जिले में एक विशाल स्तूप का निर्माण हुआ था। जिसने अवशेष में से उसकी वेस्तिनी का एक भाग तथा तोरण भारतीय संग्रहालय कोलकाता तथा प्रयाग संग्रहालय में सुरक्षित है। 1875 ई. में कनिघंम द्वारा (भारतीय पुरात्व विभाग के जनक) जिस समय इसकी खोज की गयी थी, उस समय तक इसका केवल 10 फुट लम्बा और 6 फुट चौड़ा भाग शेष रह गया था।

नोट - पुराणों के अनुसार अंतिम शुंगशासक देवभूति की हत्या उसके आमात्य वसुदेव द्वारा की गयी और वसुदेव ने ही भारत में 'कण्व वंश' की नींव डाली।

कण्व वंश के अंतिम शासक 'सुशर्मा' की हत्या 'सातवाहन वंश के जन्मदाता 'सिमुक' द्वारा की गई। कण्व वंश के इतिहास के बारे में मध्यप्रदेश से किसी प्रकार की जानकारी प्राप्त नहीं हुयी है।

सातवाहन वंश (50 ई. पू.- 300 ई.)- दक्षिण भारतीय शक्ति आंध्रदेशीय सातवाहनों ने कण्वों का अंत किया लेकिन वे उत्तर की बजाय दक्षिण (महा.) केन्द्र से ही शासन करते रहे।

पुराणों में इस वंश के संस्थापक का नाम 'सिंधु शिशुक और शिप्रक' मिलता है। इसे भृत्य भी कहा गया है। इस वंश का सबसे पराक्रमी राजा 'गौतमीपुत्र शातकर्णी' थी उसकी उपलब्धियों के संबंध में उसकी रानी नागामिका के नानाघाट अभिलेख (महाराष्ट्र) से कुछ प्रकाश पड़ता है।

सांची के बड़े स्तूप की वेदिका पर उत्कीर्ण एक लेख से शातकर्णी के पूर्वी मालवा क्षेत्र पर अधिकार की जानकारी मिलती है। कुछ सातवाहन सिक्कों पर राजा 'सिरिसात' का नामांकन मिलता है। ये सिक्के उज्जैन, देवास, जमुलिया (होशंगाबाद), तेवर, भेड़ाघाट, त्रिपुरी (जबलपुर) में 1951-52 तथा 1968-69 के उत्खनन में प्राप्त हुये है।

शातकर्णी के साम्राज्य में अनूप (माहिष्मति, महेश्वर, निमाढ़) आगर (पूर्वी मालवा) तथा अवंति (पश्चिमी मालवा) भी शामिल था, उज्जैन से भी उसके सिक्के प्राप्त हुये है।

शातकर्णी (106-130 ई.) के समय शक सातवाहन संघर्ष हुआ, उसने शक शासक नहयान (नासिक) को हराकर उसके सिक्के पर अपना नाम मुद्रित करवाया।

गौतमीपुत्र के पश्चात् उसका पुत्र 'वासिष्ठी पुत्र पुलुमावी' के सिक्के भिलसा (विदिशा) तथा देवास से प्राप्त हुये है, इसके शासनकाल (130-154 ई.) में भी मध्यभारत का बड़ा भाग अधीन रहा, लेकिन उज्जैन के शक क्षत्रप 'रूद्रदामन' ने उसे जबरदस्त शिकस्त दी। अंततः दोनों में वैवाहिक संबंध हुये और पुलुमावी को उसका राज्य वापस मिला। अंतिम प्रतापी सम्राट 'यज्ञश्री शातकर्णी' था जिसका शासनकाल 165-193 ई. तक था। मध्यप्रदेश में इसके सिक्के बेसनगर तेवर(त्रिपुरी) और देवास से प्राप्त हुये। दक्षिण कोसल (छत्तीसगढ़) में सातवाहनों के राज्य का उल्लेख चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा विवरण में है। इसकी पुष्टि बिलासपुर (छत्तीसगढ़) जिले में शक्ति के निकट गुंजी में प्राप्त शिलालेख से भी होती है। जिसमें सातवाहन राजा ' कुमारदत्त' का उल्लेख है।

इस काल में रोम से व्यापार बढ़ा था, इसलिये रोम के कुछ सिक्के मध्यप्रदेश के अवरा (मंदसौर) चकरबेड़ा तथा बिलासपुर से प्राप्त हुये है।

इण्डो-यूनानी काल (200 ई.पू.-50 ई.पू.)

मौर्यो के उपरांत पश्चिमी भारत में यूनानियों ने अपने राज्य स्थापित कियें इनमें डिमेट्रियस वंश के राजा 'मिनेण्डर' का नाम उल्लेखनीय है। स्थालकोट को राजधानी बनाकर मिनेण्डर (मिलिन्द) ने विशाल साम्राज्य स्थापित किया। उसे नागसेन ने बौद्ध बनाया। मिनेण्डर ने पाटलिपुत्र तक धावे बोले। उसके सिक्के बालाघाट से मिले हे। समकालीन रोमन शासकों के सिक्के भी अवरा (अवरा) मंदसौर से मिले है।

शक राज्य (50 ई.पू.- 300 ई.) पश्चिम भारत में यूनानी राज्य के स्थान पर शक राज्य स्थापित हुआ। पश्चिमी चीन से भारत आने वाली शक जाति ने अपने नासिक, उज्जैन, मथुरा, पंजाब में अपने क्षत्रप राज्य स्थापित किये । इस वंश के मोअस एवं अजेस राजाओं के कुछ सिक्के मालवा क्षेत्र से प्राप्त हुये है। जिनके अनुसार प्रथम शताब्दी ई.पू. मालवा के कुछ क्षेत्र शकों के अधिकार में थे।

मध्यप्रदेश के सदर्भ में नासिक और उज्जैन के शक राज्य ही महत्वपूर्ण है। जहाँ क्रमशः 'सहरात' एवं 'कार्दभक' वंश के शक राज्य थे।

क्षहरात वंश -भूमक और नहयान नामक दो प्रसिद्ध राजा इस वंश में हुये। नहयान का संघर्ष 'गौतमीपुत्र शातकर्णी' से हुआ था और नहयान मारा गया था। जुगलथुम्बी से नहयान के पुनर्मुद्रित सिक्के मिले है। शिवपुरी से भी नहयान के ढलवाये सिक्के मिले है, जिन्हें शतकर्णी ने पुनर्मुद्रित करवाया था।

इस वंश का सबसे प्रतापी क्षत्रक नहयान था, जैन साहित्य में इसका उल्लेख 'नरवाहन' अथवा 'नववाहन' के रूप में हुआ है। पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी, नामक पुस्तक में नहयान का वर्णन 'नैम्बैनस' नाम से है।

नहयान का राज्य मध्यप्रदेश के मंदसौर और उज्जैन में भी था। नहयान की राजधानी 'मिन्नगर' थी कुछ विद्वान मिन्नगर को मंदसौर मानते है।

स्कंदगुप्त द्वारा इंदौर की तेलीश्रेणी को मंदिर के लिये दान का उल्लेख एक अभिलेख में मिलता है।

कार्दमक वंश - यशोमितिक/यशोमिती और उसके पुत्र चष्टन (संभवतः इस वंश का संस्थापक) द्वारा स्थापित उज्जैन एक शक राज्य कार्दमक वंश ही था। इसका प्रसिद्ध राजा 'रूद्रदामन' संस्कृत का महान पंडित था। उसके

गिरनार स्थित संस्कृत अभिलेखागार (संस्कृत का प्रथम) सौराष्ट्र (गुजरात) में 'सुदर्शन तटक (झील) का पुननिर्माण रूद्रदामन ने करवाया था। उसने ही सर्वप्रथम तिथि युक्त चांदी के सिक्के मध्यप्रदेश में चलवाये थे। रूद्रसिंह तृतीय न सिर्फ उज्जैन का अपितु सम्पूर्ण शकों में अंतिम था। उसे मारकर चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने उज्जैन का विलय गुप्त साम्राज्य में कर लिया और इसके साथ भारत से शक सत्ता समाप्त हुयी।

चष्टन की राजधानी उज्जैयिनी थी और रूद्रदामन ने (महाक्षत्रय) भी अपनी राजधानी उज्जैयिनी ही रखी। इनका उज्जैयिनी और छिन्दवाड़ा में शासन रहा है।

टॉल्मी के अनुसार चष्टन के सिक्के उज्जैन और शिवपुरी में मिले है। इस वंश से संबंधित शासकों के सिक्के मध्यप्रदेश के शिवपुरी, सांची, सिवनी, बेसनगर, आवरा, गोंदरमक (भोपाल) से मिले है।

शकक्षत्रय रूद्रदामन ने सातवानों को हराकर दूसरी शताब्दी में पश्चिमी मध्यप्रदेश जीता।

गोंदरमऊ में पतंजलि का जन्म स्थल है जहां योग का संपूर्ण स्थापित किया जा रहा है।

कुषाण वंश-

कुषाणों का प्रभाव मध्यप्रदेश में मात्र आक्रमणों या कतिपय सांस्कृतिक गतिविधियों के रूप में कभी-कभी आया।

कुषाण वंश का सर्वप्रथम महत्वपूर्ण राजा 'कुजुज कडफिसेस' था, उसकी मृत्यु के उपरांत ''विम कडफिसेस'' उत्तराधिकारी हुआ। मध्यप्रदेश के विदिशा जिले में उसका (विम) एक सिक्का प्राप्त किया गया हे। विम कडफिसेस का प्रारम्भ किया। कनिष्क-I था, उसने 78 ई. में शक् संवत् का प्रारम्भ किया। कनिष्क-I के 324 सिक्के कुषाण शासकों की निधि से 'शहडोल' से प्राप्त हुये हे। आरा से प्राप्त अभिलेख एक में कनिष्क का उल्लेख मिलता है।

वासिष्क कनिष्क का प्रथम उत्तराधिकारी बना। मथुरा व सांची से उसके शासनकाल के अभिलेख प्राप्त हुये है। वसिष्क नामक राजा के सांची अभिलेखानुसार उसके समय दुहिता 'मधुकरि' ने एक बौद्ध प्रतिमा का निर्माण करवाया था।

वासिष्क के बाद 'हुविष्क' सिंहासन पर बैठा, जिसका मध्यप्रदेश के एक बड़े भू-भाग पर अधिकार था। हुविष्क के सिक्के झाझापुरी, शहड़ोल तथा हरदा से मिले है। इसने 138 ई. तक शासन किया। हुविष्क के पश्चात ' वासुदेव-I द्वारा कुषाण साम्राज्य का उत्तराधिकारी बना (176 ई. तक शासन) वासुदेव-I द्वारा चलाया गया एक तांबे का सिक्का तेवर (त्रिपुरी जबलपुर) से प्राप्त हुआ।

इस वंश का अंतिम नरेश वासुदेव-II प्रतीत होता है, जिसके शासनकाल के पश्चात् इस वंश का पूर्णतः विलोप हो गया। सांची से कनिष्क संवत् 28 का एक लेख मिला है। यह वासिष्क का है तथा बौद्ध प्रतिमा पर खुदा है। वासिष्क की किसी उपलब्धि का ज्ञान नहीं है उसका शासन मात्र 4 वर्ष का था। अतः कहा जा सकता है कि यह भू-भाग कनिष्क द्वारा ही विजित किया गया होगा। इस लेख में वासु नामक किसी राजा का उल्लेख मिलता है यह संभवतः कनिष्क के समय मालवा प्रदेश का उप-राजा रहा होगा। स्त्रोतों से ऐसा ज्ञात होता है कि दक्षिण से कम से कम विंध्य पर्वत तक कनिष्क का साम्राज्य विस्तार हो सकता है। भेड़ाघाट से कुषाणकालीन दो मूर्तिलेख तथा कुषाण कालीन गांधार कला की बौद्ध प्रतिमाओं की प्राप्ति हुयी है।

मालव जाति/वंश (600 BC-200 AD)

सिकंदर पर आक्रमण से प्रकाश में आयी 'मालव जाति' कालांतर में मालवा मे आकर बस गयी और यहीं पर उसने अपना शासन स्थापित किया। संभावतः मालव जाति के नाम पर ही मालवा नाम पड़ा। पाणिनी ने अपने संस्कृत व्याकरण 'अष्टाध्यायी' में मालव जाति का उल्लेख 'आयुधजीवी' के रूप में किया।

नागवंश- मथुरा के नागवंश की एक शाखा ने मध्यप्रदेश में शासन स्थापित किया। इस वंश के संस्थापक 'वृषनाथ' का सिक्का विदिशा से मिला है जो ग्वालियर संग्रहालय में संरक्षित है।

दूसरी शताब्दी ई. के अंतिम चरण में मध्यप्रदेश के दक्षिणी क्षेत्र में राजनीतिक उथल-पुथल चल रही थी, इसी समय नागवंश का उदय हुआ।

1913-14 के बेसनगर उत्खनन में नागों के सिक्के मिले है। नागवंशीय शासक भीमनाग ने अपनी राजधानी विदिशा से पद्मावती स्थानांतरित की। भीमनाग का शासन काल 210ई.-230 ई. के बीच था। गणपति नाग इस वंश का अंतिम राजा था।

इतिहासकारों ने साक्ष्यों के आधार पर यह स्पष्ट कर दिया है कि वासुदेव-II (कुषाण शासक) के समय तक कुषाण साम्राज्य का मध्यप्रदेश से प्रभाव खत्म हो चुका था क्योंकि इस समय तक राज्य में भारशिव नागों का प्रभुत्व जम चुका था। पुराणों के विवरण से पता चलता है कि पद्मावती में नागकुलों का शासन था। पद्मवती की पहचान

मध्यप्रदेश के ग्वालियर के समीप स्थित आधुनिक 'पद्म पवैया' नामक स्थान से की जाती है।

पुराणों से स्पष्ट है कि यहां पर नौ-नागवंशीय राजाओं ने शासन किया। इस वंश के राजाओं ने कुषाणों का प्रतिरोध किया था तथा उनके उन्मूलन के लिये दक्ष अश्वमेघ यज्ञ किये थे। इस वंश के राजाओं ने कुषाण वंश के अंतिम राजाओं की कमजोरी का लाभ उठाकर अपने साम्राज्य का विस्तार किया तथा विदेशियों को खदेड़ने में प्रमुख योगदान दिया।

यहीं के नाम लोग भारशिव कहलाते थे, चूँकि वे अपने कंधों पर शिवलिंग वहन करते थे, अतः इसी कारण 'भारशिव' कहलाते थे। इन लोगों का वाकाटकों के साथ वैवाहिक संबंध था। इस कुल के शासक भवनाग (305-340 ई.) की पुत्री का विवाह वाकाटक नरेश प्रवरसेन-I के साथ हुआ था।

नागवंशीय राजाओं की राजधानी पद्मावती थी प्रयाग प्रशस्ति से स्पष्ट है कि गुप्त काल के शासक समुद्रगुप्त के समय पद्मावती में इस वंश का शासक नागसेन था।

पुराणों के अनुसार विदिशा की पद्मावती के अतिरिक्त क्रांतिपुरी (वर्तमान कुटवार) में भी नागों की एक राजधानी थी।

बोधि वंश- त्रिपुरी/तेवर (जबलपुर) से बोधि राजवंश के चार शासकों के सिक्के मिले हैं- श्री बोधि, वसुबोधि, चन्द्रबोधि और शिवबोधि।

मद्यराजवंश - वशिष्ठीपुर भीमसेन माद्यवंश का पहला शासक था। बघेलखण्ड से मद्य राजाओं के सिक्के मिले है, इसमें भीमसेन भद्रमद्य, शिवमद्य उल्लेखनीय है। भीमसेन के पुत्र का नाम -कौत्सीपुत्र पोठसिरि मिलता है। वह एक योग्य शासक था तथा इसकी राजधानी बांधोगढ़ थी। कई मद्यवंशी शासकों के सिक्के, मोहरें तथा शिलालेख कौशाम्बी एवं भीटा के अतिरिक्त बांधवगढ़ (शहड़ोल) से प्राप्त हुये है। मद्यवंशी शासकों के विरोध के कारण कुषाण सत्ता महाकौशल क्षेत्र में नदी पायी। नागों की राजधानी पद्मावती के दक्षिण-पूर्व में मद्यों का राज्य स्थित था।

पहले राज्य केवल बघेलखण्ड (रीवा मण्डल) तक ही था।

औलिकर वंश -प्राचीन दशपुर (मंदसौर) में चौथी शदी ई. पमें औलिकर वंश की सत्ता स्थापित हुयी। इनकी राजधानी दशपुर थी। जयवर्मन सिंहवर्मन, नरवर्मन इसके प्रारिम्भक शासक थे। एक शासक 'वंधुवर्मन' का प्रसिद्ध शिलालेख मंदसौर में है। जिसके अनुसार बंधुवर्मन, स्कंदगुप्त का सामंत बन गया था। इस अभिलेख में उसके द्वारा सूर्य मंदिर हेतु जुलाहा श्रेणी को दान देने का उल्लेख भी है। यहीं से प्राप्त एक और शिलालेख में राजा 'यशोवर्मन' का उल्लेख है जिसने भारत की दिग्विजय की और जनेन्द्र नराधिपति, राजाधिराज, परमेश्वर आदि उपाधियों धारण की। यशोवर्मन संभवतः मौखरि वंश या औलिकर वंश से संबंधित था।

मालव संवत् 589 (532-533 ई.) में दशपुर पर यशोवर्मन और विष्णुवर्मन शासकों के अधिपत्य की जानकारी मंदसौर से प्राप्त दो अभिलेख से होती है। मंदसौर शिलालेख में यशोवर्मन ने स्वतः को जनेन्द्र नराधिपति, राजाधिराज, परमेश्वर आदि उपाधियों से अलंकृत कियां अभिलेख में उसने ब्रह्मपुत्र से लेकर महेन्द्र पर्वत तक तथा हिमालय से लेकर पश्चिमी समुद्र के क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया। हूण नरेश मिहिरकुल को भी पराजित किया।

परिव्राजक या उत्कल वंश-

पन्ना में स्थापित परिव्राजक वंश की सत्ता पूरे बुंन्देलखण्ड तक व्याप्त थी। इसका पहला राजा देवादय था। प्रभंजन 'दामोदर और इस्तिन उसके उत्तराधिकारी हुए, जिनमें हस्तिन (475-517 ई.) प्रतापी राजा था खोह और मझगंवा तामपत्र हस्तिन से संबंधित है। इनकी राजधानी उच्च कल्य (सतना में वर्तमान ऊँचहेरा) भी हस्तिन का उत्तराधिकारी उसका पुत्र संक्षोभ हुआ। बैतूल एवं खोह से प्राप्त ताम्रपत्रों के अनुसार संक्षोभ ने डाहल क्षेत्र पर शासन किया।

उच्च कल्य राज - उच्च कल्य सतना में स्थित ऊंचहरा का प्राचीन नाम है। यहाँ महाराज की उपाधि धारण करने वाले ओद्यदेव, कुमारदेव, जय स्वामिन, व्याघ्र, जयनाथ, सर्वनाथ आदि प्रमुख राजा हुये। संभवतः ये परिव्राजक/उत्कल वंश के ही थे।

शैलवंश- महाकौशल क्षेत्र में 8वीं सदीं में शैल वंश नामक एक राजवंश ने शासन किया था, इसकी जानकारी राधौली (बालाघाट) ताम्रपत्र से होती है, जिसे जयवर्मन ने उत्कीर्ण करवाया था।

शैलवंश का प्रथम शासक श्रीवर्मन था, जिसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र पृथुवर्धन हुआ जिसने गुर्जर प्रदेश पर विजय प्राप्त की। श्रीवर्मन-II को विंध्य का स्वामी बताया गया है। जयवर्धन-II इस वंश का अंतिम शासक था।

गुप्तकाल (280-550 ई.)-

संस्थापक - श्रीगुप्त

गुप्तों के समय एक बार फिर भारत का राजनीतिक एकीकरण हुआ। मध्यप्रदेश में उनके प्रातापी राजाओं की उपस्थिति और अभियान इस क्षेत्र के राजनीतिक महत्व को स्थापित करती है।

जब गुप्तों का पाटलिपुत्र में उदय हो रहा था। तब मध्यप्रदेश में अनेक क्षेत्रीय शक्तियाँ थी जैसे पश्चिमी मध्यप्रदेश में 'शक' एक अत्यंत मजबूत राज्य था। मध्यप्रदेश में आभीर, नागवंश जैसे राज्य भी शक्तिशाली थे।

श्रीगुप्त के बाद उसका पुत्र घटोत्कच इस वंश का राजा हुआ। चन्द्रगुप्त-I ने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धाररण की। गुप्त संवत् का प्रवर्तन चन्द्रगुप्त-I ने ही 319-320 ई. में किया था। सागर स्थित 'ऐरण' नामक स्थान से खण्डित लेख प्राप्त हुआ है, जिसमें समुद्रगुप्त को प्रथु, राघव आदि राजाओं से भी बढकर दानी कहा गया है। एवं एरण उसका भोगनगर था।

हरषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति की 13वीं व 14वीं पंक्तियों से यह स्पष्ट जानकारी मिलती है कि समुद्रगुप्त अपनी दिग्विजय प्रक्रिया के प्रारम्भ में सर्वप्रथम उत्तर-भारत के तीन शक्तिशाली राजाओं यथा-अच्युत, नागसेन व कोतकुलज के साथ 'आर्यावर्त के प्रथम युद्ध में सभी को पराजित किया। उसकी अधीनता स्वीकारने वाले 9 गणराज्यों में आभीर, समकालिक, रवरपरिक के राज्य मध्यप्रदेश के विदिशा, झांसी, दमोह के आस-पास केन्द्रित था।

इस प्रकार समुद्रगुप्त शक राज्य (रूद्रसिंह-II ,348-378 ई. , जो मालवा, गुजरात व काठियावड़ का शासक था) को छोड़कर शेष मध्यप्रदेश पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर चुका था। उसके सिक्के यहाँ से मिले है। 'कांच/कांप' नामक सिक्के भी गुप्तों की अधिपत्यता की पुष्टि करते है, जो विदिशा से मिले है। इस तरह से समुद्रगुप्त ने मध्यप्रदेश के अधिकांश भाग तथा नर्मदा की उत्तरी सीमा तक अपना राज्य स्थापित कर लिया इसकी पुष्टि बमनाला तथा सकोर से प्राप्त समुद्रगुप्त के सिक्कों से होती है।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने शक राज्य (उज्जैयिनी के कार्दमक वंश) का अंत कर लगभ्ज्ञग संपूर्ण मध्यप्रदेश को अपने अधीन कर लिया। दुर्जनपुर (विदिशा) के लेख के अन ुसार समुद्रगुप्त के बाद उसका पुत्र रामगुप्त शासक बना। यह जानकारी मालवा के एरण व भिलसा से प्राप्त ताम्रमुदाओं से होती है। भिलसा से ताम्र सिक्के प्रसिद्ध मुद्राशास्त्री परमेश्वरी लाल गुप्त को प्राप्त हुए थे, जबकि ऐरण से सागर विश्विविद्यालय के अध्यक्ष कृष्णदावत वाजपेयी को प्राप्त हुए थे। जिनमें ऐरण के सिक्के पर सिंह व गरूड़ का चित्र था। गरूड़ गुप्त वंश का राजकीय चिन्ह था।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने नाग वंश की कन्या कुवेरनाग से विवाह कर नागवंशिय शासकों से मैत्री की इसी कुवेरनाग से प्रभावित गुप्त नामक एक कन्या का जन्म हुआ।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने शक राज्य (उज्जैयिनी के कार्दमक वंश) का अंत कर लगभग संपूर्ण मध्यप्रदेश को अपने अधीन कर लिया। उसकी शक विजय 'देवीचन्द्रगुप्तम' से और उसकी 'शफारी' उपाधि से पता चलती है। सांची अभिलेख भी उसके एक दीर्घकालीन अभियान की पुष्टि करता है 'देवीचन्द्रगुप्तम' के अनुसार राजा रामगुप्त ने शक राजा से परास्त होकर अपनी पत्नी ध्रुव देवी को उसे सौंपना स्वीकर कर लिया था लेकिन उसके स्वाभिमानी माई चन्द्रगुप्त ने शक को मारकर ध्रुवस्वामिनी को मुक्ति दिलाई और रामगुप्त का वध कर गुप्त सम्राट बना। विदिशा संग्रहालय स्थित मूर्ति रामगुप्त की ऐतिहासिकता दर्शाती है। चन्द्रगुप्त ने उज्जैयिनी को दूसरी राजधानी बनाया और यहीं उसके दरबार में नवरत्न होते थे। उसके उत्तराधिकारी कुमारगुप्त की मंदसौर प्रशस्ति के अनुसार उसके सामंत बंधवर्मा ने सूर्य मंदिर को दान दिया था। स्कंदगुप्त के समय सफेद हुणों (Heapthalites) आक्रमण का फायदा उठाकर वाकाटकों ने मालवा पर अधिकार कर लिया था। लेकिन स्कन्दगुप्त ने उसे पुनः छीन लिया।

वर्मा वशं-

गुप्तकाल में मालवा पर समुद्रगुप्त के समकालीन सिंग वर्मा का शासन रहा इसके दो पुत्र थे पहला चन्द्र वर्मा जिसने मारवाड में राज किया। द्वितीय नववर्मा जिसके दो पुत्र - बंधुवर्मा और भीमवर्मा हुए। बंधुवर्मा कुमार गुप्त प्रथम (गुप्तनरेश) का सामंत था जिसकी दशपुर में जुलाहा श्रेणी को सूर्य मंदिर हेतु दान का उल्लेख है। एक उत्तरकालीन गुप्त राजा भानुगुप्त गुप्त साम्राज्य पर शासक करता दिखाई देता है जल जब उसने हुणों को परास्त किया। इस युद्ध में उसका सैनिक गोपीराज मारा गया था। जिसकी विधवा के सती होने का जिक्र एरण अभिलेख में है।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के नवरत्न

- कालीदास
- धन्वंतरी
- घटकर्प
- बेतालभट्ट
- अमरसिंह
- क्षणपक
- शुक
- बररूचि
- वराहमिहिर

गुप्तकालीन प्रमुख अभिलेख-

मन्दसौर अभिलेख- यह भू-भाग प्राचीन पश्चिमी मालवा का हिस्सा था जिसका नाम दशपुर भी मिलता है। इसमें विक्रम संवत् 529 (473 ई.) की तिथि दी गई है। यह लेख प्रशस्ति के रूप में है इस लेख में इस राजा के राज्यपाल बन्धुवर्मा का उल्लेख मिलता है जो वहां शासन करता था। इस लेख में सूर्य मंदिर के निर्माण का भीउल्लेख किया गया है।

सांची अभिलेख - गुप्त से प्राप्त लेख गुप्त संवत् 131-450 ई. का है। इसमें हरिस्वामिनी द्वारा यहां के आर्यसंघ को धन दान में दिये जाने का जिक्र हैं।

उदयगिरी गुहालेख- गुप्त संवत् 106 या 425 ई. का एक जैन अभिलेख मिला है। इसमें शंकर नामक व्यक्ति द्वारा इस स्थान में पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित किये जाने का विवरण है। इस लेख से चन्द्रगुप्त-II द्वारा विदिशा क्षेत्र में किये गये अभियान का पता लगता है।

तुमैन अभिलेख (अशोक नगर)- यहाँ से गुप्त संवत् 116 या 435 ई. का लेख मिलता है, इसमें राजा को 'शरद कालीन सूर्य की भाँति' बताया गया है। कुमार गुप्त के शासनकाल के समय पुष्यमित्र जाति के लोगों को शासन नर्मदा नदी के मुहाने के समीप मैकल में था। एरण (पूर्वी मालवा) पर भी कुमार गुप्त का शासन स्थापित था।

सुपिया का लेख (रीवा)- इसमें गुप्त संवत् 141-460 ई. की तिथि लिखी है। इसमें गुप्तों की वंशावली घटोत्कच के समय से मिलती है तथा गुप्त वंश को घटोत्कच कहा गया है।

ऐरण अभिलेख- तोरमाण का वराह प्रतिमा अभिलेख मिहिरकुल का ग्वा. अभिलेख हूणों की उपस्थिति दर्शाता है।

भारत में हूणों का द्वितीय बार आक्रमण नरसिंहगुप्त बालदिव्य (बुद्धगुप्त का छोटा भाई) के शासनकाल में हुआ, जिसमें हूण नरेश मिहिरकुल की पराजित होना पड़ा तथा गुप्त नरेश द्वारा बन्दी बनाकर माँ के कहने पर मुक्त कर दिया गया।

- हरिषेण के प्रयाग अभिलेख से विदित होता है कि समुद्रगुप्त ने तत्कालीन विदिशा शासक 'श्रीधर' को पराजित करके विदिशा पर अधिकार कर लिया।
- सुपिया (रीवा) स्मारक स्तंभलेख तथा सकोर (दमोह) से प्राप्त सोने के सिक्कों से स्कंदगुप्त के मालवा विंध्यप्रदेश तथा महाकौशल क्षेत्र पर अधिकार का पता चलता है।
- इलाहाबाद प्रशस्ति में समुद्रगुप्त की दक्षिणपथ्ज्ञ (12) विजय का वर्णन है- जिसके अनुसार राजा महेन्द्र (द. कोसल), व्याघ्रराज (महाकान्तर, बस्तरएवं सिंहावा के जंगली प्रदेश), मण्टराज (केरल), महेन्द्रगिर (पिष्टपुर) स्वामिदत्त (कोट्टुर), दमन (एरण्डपल्ल), विष्णुगोप (कांची), नीलराज (अवमुक्त), हरिस्तवर्मन (वेंगी), राजा उग्रसेन (पालक्कम) कुबेर (देवराष्ट्र), धनंजय (कुस्थल) को पराजित किया। इस अभियान में समुद्रगुप्त मध्यप्रदेश के पूर्वी व दक्षिणी भाग से होता हुआ उड़ीसा पहुँचा।
- अंतिम नरेश-विष्णुगुप्त

हूण आक्रमण (459-460 ई. में प्रथम आक्रमण)-

हूण यायावर जंगलियों का एक गिरोह था, जिनका निवास स्थान सिनचीन (चीन की खूँखार जनजाति) था। हूणों का प्रामाणिक पहला आक्रमण स्कंदगुप्त के समय 459 ई. में माना जाता है जिसमें हूण बुरी तरह पराजित हुये और लगभग 50 वर्षों तक वे भारत पर पुनः आक्रमण नहीं कर पाये।

5वीं सदी के अंत में एवं छठी सदी के प्रारम्भ में तोरमाण पंजाब तथा पश्चिमी भारत को जीतता हुआ मध्यप्रदेश के सागर जिले तक पहुँच गया। सागर जिले में स्थित एरण में उपलब्ध एक विशालकाय वराहमूर्ति पर तोरमाण के शासनकाल के प्रथम वर्ष के अभिलेख उत्कीर्ण है। एरण से

प्राप्त ताँबे के सिक्के में 'महाराजधिराज' की उपाधि धारण की।

515 ई. में तोरमाण के पश्चात् उसका पुत्र 'मिहिरकुल' उसका उत्तराधिकारी हुआ। उसका राज्य कश्मीर से मालवा तक था। ग्वालियर दुर्ग से प्राप्त अभिलेख में गोप पर्वत पर सूर्य मंदिर के निर्माण का उल्लेख है, यह मंदिर मंदसौर में है।

मंदसौर के औलिकर वंशी यशोधर्मन ने मिहिरकुल को पराजित कर मालवा से खदेड़ दिया था। कुछ समय पश्चात उसने एक बड़े भाग पर अधिकार कर लिया, परन्तु गुप्त सम्राट नरसिंहपुर बालादित्य ने उसे हराया, इसके पश्चात् हूण साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया।

वाकाटक राजवंश-

संस्थापक - विंध्यशक्ति (205-270 ई.)

मूलतः मध्यप्रदेश का राजवंश था।

पुराणों के अनुसार विध्यशक्ति विदिशा का शासक था। इसके पश्चात् इसका पुत्र प्रवरसेन का शासनकाल 270 ई. -330 ई. के बीच माना गया है। इसने अनेक दिशाओं में साम्राज्य विस्तार किया। उत्तर में नर्मदा तक अभियान कर पुरिका नगरी पर अधिकार कर लिया। प्रवरसेन ने अश्वमेघ यज्ञ किया तथा अपनी शक्ति को सशक्त करने के उद्देश्य से पद्मावती के नागवंश के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किये, जिससे बाकाटकों को नाग राजाओं का संरक्षण प्राप्त हो गया। प्रवरसेन की मृत्यु के पश्चात् साम्राज्य उसके चार पुत्रों में बट गया- इसकी कुल दो शाखाओं राज करती हुयी दिखायी देती है।

नंदिवर्धन/पुरिक शाखा- नागपुर के निकट स्थित आधुनिक नगर धन में ज्येष्ठ शाखा की स्थापना 'रूद्रसेन'-I ने की। इसके एक उत्तराधिकारी 'नरेन्द्रसेन' ने हूण आक्रमण का लाभ लेकर गुप्तों से मालवा छीन लिया था।

वत्सगुल्म शाखा - दूसरे पुत्र सर्वसेन ने वत्सगुल्म में इस शाखा की स्थापना की। संभवतः एक ने कृष्णा नदी तथा दूसरे ने दक्षिण कोसल (छत्तीसगढ़) पर अपनी सत्ता स्थापित की। अंततः हरिषेण ने इन दोनों शाखाओं को पुनः एकीकृत किया।

रूद्रसेन का शासनकाल 330 ई.-350 ई. तक रहा तथा इसके वंशजों के लेखों में यह भारशिव महाराज 'भवनाग' का दौहित्र (नाती) था। समुद्रगुप्त के दक्षिण पथ अभियान में महाकान्तर (बस्तर) के ब्याघ्रराज, केरल के मण्टराज और पिष्टपुर के महेन्द्रगिरी राजाओं ने वाकाटकों की प्रभुसत्ता छोड़कर गुप्त राजाओं का स्वामित्व स्वीकार किया। इससे वाकाटाकों की ज्येष्ठ शाखाओं का राज्य नर्मदा नदी तथा इत्यादि पर्वतमाल के बीच तक सीमित हो गया।

समुद्रगुप्त के विजय अभियान से वाकाटकों की शक्ति को बड़ा झटका लगा। रूद्रसेन-I का उत्तराधिकारी 'पृथ्वीसेन-I' 350 ई. में सिंहासन पर बैठा। पृथ्वीसेन के 'माण्डलिक व्याघ्रदेव' के दो शिलालेख नचना तथा गन्स से प्राप्त हुये है। इसके शासनकाल में चन्द्रकाल में चन्द्रगुप्त-II ने अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह पृथ्वीसेन के पुत्र 'रूद्रसेन' से कर दिया। जिसने गुप्तों और वाकाटकों में मित्रता को चिर स्थायी रूप दे दिया।

पृथ्वीसेन के पश्चात् उसका पुत्र 400-405 ई. तक ही राज्य कर सका। उसकी मृत्यु के पश्चात प्रथावती गुप्त दिवाकर सेन के नाम से राज्य करने लगी। दिवाकर सेन की 420 ई. में मृत्यु के पश्चात् उसका छोटा भाई दामोदर सेन 'प्रवरसेन-II' के नाम से गद्दी पर बैठा। उसके 12 दानपत्रों में से 5 वर्तमान मध्यप्रदेश छिंडवाड़ा, सिवनी, बैतूल, बालाघाट तथा इंदौर जिलों से प्राप्त हुये है जिससे इन क्षेत्रों पर उसके अधिकार का ज्ञान होता है। उसने अपने नाम से प्रवरपुर नामक नगर भी बसाया। इतिहासकार आधुनिक पवनार को ही प्राचीन प्रवरपुर मानते है।

प्रवरसेन-II का पुत्र नरेन्द्र सेन 450 ई. में गद्दी पर बैठा बालाघाट से प्राप्त उसके पुत्र पृथ्वीसेन -II के वाम्रपत्र में उल्लेख आया है। जिसमें कौसल तथा मालवा देश के अधिपति उसकी आज्ञा मानते थे।

नरेन्द्र सेन के समय बस्तर के नलवंशी भवदत्त के नलवंशी भवदत्त वर्मा ने आक्रमण कर बड़े भू-भाग पर अधिकार कर लिया था। उसके पुत्र के बालाघाट अभिलेख में उसे 'निगम्वंश' का उद्धारकर्ता' कता गया हैं पद्यपुर से प्रचलित एक अपूर्ण ताम्रपत्र दुर्ग जिले से प्राप्त हुआ है।

वाकाटक वंश के प्रमुख राजा-

1. **प्रवरसेन**-I-चार अश्वमेघ यज्ञ किये।
2. **प्रवरसेन**-II-सेतुबंध काव्य की रचना प्राकृत भाषा में की।
3. **सर्वसेन**-I-गाथा सप्तशती, हरिविजय की रचना।

राजर्पितुल्य-इस वंश के 6 राजाओं ने दक्षिण कोसल में राज्य किया। इसकी जानकारी इस वंश के अंतिम राजा भीमसेन द्वितीय के आरम्भ तामपत्र (जि-रायपुर) से होती है। ये 6 राजा थे। शूरा, दयित प्रथम। विभीषण, भीमसेन प्रथम, दयित द्वितीय और भीमसेन द्वितीय। गुप्त संवत के प्रयोग से यह पता चलता है कि यह वंश गुप्तों की

अधिनता मानता था। आरंभ तामपत्र की तिथि 182 या 282 गुप्त संवत है।

नलवंश (400-1100 ई.)-

बस्तर-कोशपुट क्षेत्र में स्थापित नलवंश का पहला वराहराज था लेकिन उसका वास्तविक संस्थापक था- भावदत्त वर्मा। वराह राज की 29 स्वर्ण मुद्रायें एडेंगा (कोण्डागाय तहसील) से मिली हैं। भावदत्त वर्मा के बारे में जानकारी ऋशिपुर (अमरावती) ताम्रपत्र और पोड़गढ़ शिलालेख से होती है। उसने वाकाटकों से नागपुर छीन लिया था। भावदत्त के बाद अर्थपटि राजा बना जिसकी जानकारी केशरिबढ़ ताम्रपत्र और पंडिया पाथर लेख से होती है। अर्थपति अपनी राजधानी पुष्करी में वापस ले आया था। इसके समय वाकाटकों ने नागपुर पुनः प्राप्त कर लिया था।

इसके उत्तराधिकारी स्कंदवर्मा ने पुष्करी का पुर्ननिर्माण करवाया। इसके बाद विलासतुंग राजा हुआ जिसका एक अभिलेख राजिम से मिला हैं विलासतुंग राजा हुआ जिसका एक अभिलेख राजिम से मिला है। विलासतुंग राजिम (छत्तीसगढ़) के प्रसिद्ध राजीवलोचन मंदिर का निर्माण (700-740 ई.) में कराया। कुलिया (दुर्ग) से प्राप्त मुद्रायें नंदनराज और स्तंभ नामक दो नल राजाओं का उल्लेख करती है। 10वीं शदी के मध्य में एक नल राजा भी (मसेन) दिखायी देता है। अंततः 800 वर्षों का नलराज्य 12वीं शदी की शुरूआत में समाप्त हो गया।

शरभपुरीय वंश -लगभग 5वीं शदी ई. के अंत में दक्षिण कोसल में एक नये राजवंश की स्थापना हुयी। भानुगुप्त के एरण स्तंभ लेख (गुप्त संवत् 191 अथवा 510 ई.) में शरभराज का उल्लेख है, जो संभवतः शरभपुरीय वंश का संस्थापक था।

शरभ का उत्तराधिकारी नरेन्द्र था। इसके तीन ताम्रपत्र प्राप्त हुये है। इसके पश्चात् 'प्रसन्नमात्र' नामक एक शक्तिशाली राजा हुआ। परवर्ती अभिलेखों में वंशावली इसी नरेश से प्रारम्भ की गयी है। इसने अपने नाम से प्रसन्नपुर नामक नगर की स्थापना की थी, जो निडिला नदी के किनारे स्थित था। प्रसन्नपुर का तादात्मय मल्हार से स्थापित होता है। प्रसन्नमात्र ने भारी मात्रा में स्वर्ण तथा रजत मुद्रायें प्रचलित की थीं जिसमें गरूड़ शंख तथा चक्र अंकित है।

इसके पश्चात जयराज मानमात्र, दुर्गराज, सुदेवराज, प्रवरराज आदि राजा हुये। प्रसपराज-I अत्यंत महत्वाकांक्षी राजा था, अतः उसने श्रीपुर (रायपुर) में अपनी राजधानी स्थापित की थी। प्रवरराज-II इस वंश का अंतिम राजा हुआ, जिसके दो ताम्रपत्र लेख 'ठाकुर दिया' और 'मल्हार' से प्राप्त हुये है। 'इन्द्रबल राज' उसका सामंत था।

इंद्रबल सुदेवराज की मृत्यु के पश्चात् प्रवरराज-II के काल में अवसर पाकर दक्षिण कौसल के उत्तर-पूर्वी भाग पर आधिपत्य स्थापित करके स्वयं राजा बन गया और श्रीपुर के पाण्डुवंश की स्थापना की।

दक्षिण कौसल क्षेत्र में गुप्तों के समकालीन दूसरी राजधानी शरभपुरी में थी। नरेन्द्र का उल्लेख मैटल के पाण्डुवंशी राजा भरतबल के ताम्रपत्र एक औरंग में और दो मल्हार में मिले है। जयराज का उत्तराधिकारी उसका ज्येष्ठ पुत्र 'सुखदेव' हुआ जिसके सात ताम्रलेख प्राप्त हो चुके है।

पाण्डुवंशियों ने दक्षिण कौसल की विजय कर शरभपुरीय राजवंश को समाप्त कर श्रीपुर को अपनी राजधानी बनाया।

वल्लभी का मैत्रक वंश- छठी सदी ई. के मध्य में जब गुप्त शासकों की सत्ता पतनगामी हुयी तो इसके पूर्व मैत्रकों ने अपने अभिलेखों में गुप्त अधीनता का उल्लेख करना बंद कर दिया और स्वतंत्र होकर मैत्रक वंशी शासकों ने अपने साम्राज्य का विस्तार करना आरम्भ कर दिया था।

चीनी यात्री ह्वेनसांग के वर्णन से ज्ञात होता है, कि मैत्रक वंशी शासक महाराज शिलादित्य-I (धर्मादित्य) 580 ई. में वल्लभी में राज्य कर रहा था। उसने अपने राज्य की सीमाओं का विस्तार पश्चिमी मालवा तक कर लिया था।

शिलादित्य का उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई खरग्रह हुआ तथा खरग्रह का पुत्र धरसेन-III का उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई ध्रुवसेन-II (बालादित्य) हुआ जो चीनी यात्री ह्वेनसांग का समकालीन था। उसके पश्चिमी मालवा क्षेत्र पर अधिकार का पता रतलाम जिले से प्राप्त ताम्रपत्रों से चलता है मैत्रक का राजवंश 766 ई. तक चलता रहा और 766 से 783 ई. के बीच इसका लोप हो गया।

मेकलका पाण्डव वंश-वर्तमान अमरकंटक (अनूपपुर) तथा उसके आस-पास का क्षेत्र प्राचीन काल में मेकल के नाम से जाना जाता था। पुराणों में मेकल का नाम, परन्तु इस क्षेत्र के इतिहास की जानकारी नहीं मिलती। मेकल के पांडव वंश के राजाओं की जानकारी राजा नागबल के शासनकाल में बसनी से प्राप्त ताम्रलेख से होती है। इस अभिलेख में इस वंश का सर्वप्रथम राजा जयबल था, फिर उसका पुत्र वत्सराज था, फिर उसका पुत्र महाराज नागबल

हुआ, जिसकी रानी इन्द्रभक्तारिका से महाराज भरतबल का जन्म हुआ। इन नामों का उल्लेख करते हुये उनके नामों के आगे कोई पदवी प्रयोग नहीं की गयी, इससे विदित होता है कि जयबल और वत्सराज संभवतः साधारण सामंत थे और समकालीन गुप्त वंश के अधीन थे। बाद में गुप्त वंश की शक्ति का ह्रास होने पर परिस्थिति का लाभ उठाकर वे स्वतंत्र बन बैठे। भरतबल इस वंश का अंतिम सम्राट था। इसके पश्चात् इस संबंध में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है।

वर्धनवंश/पुष्यभूति वंश-छठी शताब्दी ई. थानेश्वर (हरियाणा) के वर्धन वंश का उदय हुआ। नरवर्द्धन, आदित्य वर्धन तथा प्रभाकर वर्धन इस वंश के प्रारम्भिक राजा थ। इस वंश का प्रभावशाली शासक हर्षवर्धन (606-143 ई0) था, जो कन्नौज का शासक था। उसकी बहन राजश्री का विवाह ग्रहवर्मन के साथ हुआ था।

हर्षचरित, मधुवन और बसखेड़ा के लेखों से यह स्पष्ट होता है कि राज्यवर्धन अपने बहनोई व बहन की खबर पाकर युद्ध के लिये निकल पड़े, जिसने देवगुप्त की हत्या कर दी, परन्तु देवगुप्त के मित्र गौड़ नरेश शशांक, जो बंगाल का शासक था, ने धोखे से राज्यवर्धन की हत्या कर डाली।

राज्यवर्धन की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई हर्षवर्धन 16 वर्ष की आयु में थानेश्वर की गद्दी पर बैठा। हर्षवर्धन के शासनकाल में चीनी यात्री ह्वेनसांग भारत भ्रमण पर आया था। हर्ष को अपने राज्यकाल में गोंडो के अतिरिक्त चालुक्य, वल्लभी तथा सिंध के शासकों के साथ युद्ध करना पड़ा। विंध्य का आटविक क्षेत्र हर्ष के राज्य के अंतर्गत था। उसके साम्राज्य के विभिन्न भागों में उसे द्वारा प्रचलित संवत् लम्बे समय तक चला।

खजुराहों से प्राप्त एक मूर्ति पर हर्ष संवत् 218 की तिथि उत्कीर्ण है, हर्ष प्राचीन भारत का अंतिम हिन्दू सम्राट था, जो अपने शासनकाल के दौरान वर्तमान म0प्र0 के प्राचीन प्रान्तों यथा पूर्व मालवा, पश्चिमी मालवा, उज्जैन आदि प्रान्तों का शासक था।

इस प्रकार पश्चिम में यमुना तथा नर्मदा के बीच का सम्पूर्ण भू-भाग इसके साम्राज्य में शामिल हो गया। इसने 647 ई0 भू-भाग हर्ष के साम्राज्य में शामिल था।

राष्ट्रकूट वंश-मूलतः मान्यखेत(महा0) में स्थापित राष्ट्रकूट वंश की एक शाखा 9 वीं सदी में बैतूल क्षेत्र में भी शासन कर रही थी। इनके एक राजा युहासूर के ताम्रपत्र तिवरखेड़ी (मुल्ताई के पास) और मुल्ताई (बैतूल) से मिले हैं। इस वंश के गोविन्द-III ने नागभट्ट-II गुर्जर को परास्त कर उज्जैन में दरबार लगाया था।

ध्रुव ने मालवा पर अधिकार किया तथा वत्सराज (मालवा का प्रतिहार नरेश) एवं धर्मपाल (बंगाल का पाल नरेश) को हराया। इन्द्र- III ने त्रिपुरी के कल्चुरी वंश की राजकन्या वेजवा से विवाह किया। इसका अभिलेख इंद्रगढ़ (मंदसौर) से मिला है।इन्द्र- III के समय अरबी यात्री असलम सूरी भारत आया था। राष्ट्रकूट वंश की दो शाखाओं का राज्य म0प्र0 के कुछ हिस्सों में सातवीं शदी से 10 वीं शदी तक रहा है।

राष्ट्रकूट वंश की एक शाखा बैतूल, अमरावती क्षेत्र पर 7वीं-8वीं शदी में राज्य करती थी। इस शाखा के चार राजाओं के नाम ज्ञात है- दुर्गराज, गोविन्दराज, स्वामिकराज तथा नन्नराज युद्धासुर।

नन्नराज युद्धासुर के दो ताम्रपत्र बैतूल के तिवरखेड़ी तथा मुल्ताई से प्राप्त हुये हैं।

राष्ट्रकूट वंश की दूसरी शाखा मान्यखेत में राज्य करती थी। इस शाखा का शक्तिशाली शासक दंतिदुर्ग था, जो 744 ई0 के लगभग राजा बना।

समनगढ़ तथा एलोरा से प्राप्त अभिलेखों में वर्णन है कि दंतिदुर्ग ने माही, महानदी तथा रेवा के तटों पर कई युद्ध किये। एक अन्य अभिलेख में उसके मालवा विजय के संबंध में कहा गया है, कि उसने उज्जैयिनी पर आक्रमण कर वहाँ से गुर्जर शासक को पराजित कर बंदी बना लिया तथा विजय के उपलक्ष्य में वहाँ हिरण्यगर्भ दान दिया। इस तरह 750 ई0 तक लगभग म0प्र0 का एक बड़ा भाग उसके राज्य के अंतर्गत हो गया था।

कन्नौज के गुर्जर-प्रतिहार वंश-मूलतः जोधपुर-मेड़ता (राज0) में हरिश्चन्द्र द्वारा स्थापित गुर्जर-प्रतिहार वंश की एक शाखा नागभट्ट-I (730-756 ई0) के समय उज्जैयिनी (अवंति) में स्थापित हुयी। इसने अरबों के आक्रमण को विफल किया। ग्वा0 अभिलेख से इस वंश के शासक अपने को राम के भाई लक्ष्मण, जो उनके प्रतिहार (द्वारपाल) थे, का वंशज होने का दावा करते हैं।

ज्ञातव्य है कि जिस समय बंगाल में पाल वंश के धर्मपाल का शासन था, उस समय मालवा में गुर्जर-प्रतिहार वंश के शासन की स्थापना हो चुकी थी, जिसका शासक वत्सराज था। इस वंश के शासक रामभद्र के समय प्रतिहारों की शक्ति में ह्रास हुआ। रामभर्द का पुत्र

मिहिरभोज-I गद्दी पर बैठा तो उसने सर्वप्रथम मध्यभारत व राजपूताना में अपनी स्थिति पुनः सुदृढ़ कर ली क्योंकि ये राज्य उसके पिता के समय स्वतंत्र हो चुके थे। मिहिर नर्मदा नदी के तट पर हुये युद्ध में राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण-III को भी हराया। इस विजय के साथ मालवा पर उसका अधिकार स्थापित हो गया।

राष्ट्रकूट अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि मिहिरभोज व कृष्ण-III (राष्ट्रकूट नरेश) के बीच दुबारा उज्जैयिनी में युद्ध हुआ, जिसका कोई परिणाम नहीं निकला तथा मालवा पर मिहिरभोज का अधिकार बना रहा। मिहिरभोज के बाद उसका पुत्र ''महेन्द्रपाल-I'' शासक बना जिसने पिता के साम्राज्य को बनाये रखा। उसके काल में मालवा का परमार शासक 'वाक्पति' भी संभवतः उसकी अधीनता स्वीकार करता था।

इसकी मृत्यु के पश्चात् भोज-II राजा बना जिसे हराकर महिपाल (सौतेला भाई) यहाँ का राजा बना, जिसे सर्वप्रथम राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र-II के साथ कन्नौज में हुये युद्ध में पराजित होना पड़ा तथा उसे अपनी जान बचाने के लिये युद्ध स्थल से भागना पड़ा। राष्ट्रकूट नरेश के दक्षिण वापस चले जाने के कारण उसने पुनः इस भू-भाग पर अपना अधिकार कर लिया। इसके साम्राज्य में ग्वालियर भू-भाग शामिल था।

वत्सराज (गुर्जर-प्रतिहार नरेश) ने राज्य विस्तार किया, जिससे राष्ट्रकूट-पाल-प्रतिहार के मध्य त्रि-पक्षीय संघर्ष शुरू हुआ। नागभट्ट-II ने अंततः कन्नौज पर अधिकार कर त्रि-पक्षीय संघर्ष में प्रतिहारों को विजयी बनाया। लेकिन राष्ट्रकूट नरेश गोविन्द-III ने उसे शिकस्त दी। मिहिरभोज के समय प्रतिहार शक्ति का उत्थान हुआ। अरब यात्री सुलेमान ने मिहिरभोज को उस समय का सबसे शक्तिशाली राजा बताया। ग्वालियर और कहसा अभिलेख मिहिर भोज से संबंधित है। उसके एक उत्तराधिकारी महिपाल (915 ई0) का जिक्र अरब यात्री अलमसूदी ने किया है। प्रतिहार राजा राज्यपाल को चन्देल नरेश गंड (विद्याधर) ने मारकर त्रिलोचन पाल को राजा बनाया। यशपाल (1036 ई0) के साथ ही प्रतिहार वंश समाप्त हुआ। त्रि-पक्षीय संघर्ष में अंततः गुर्जर-प्रतिहार वंश की जीत हुयी थी।

परमार वंश

नवीं शदी के पूर्वार्द्ध में मालवा (प0-म0प्र0) में एक नवीन राजवंश का उदय हुआ, जो परमार राजवंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। परमार वंश के आरम्भिक शासक उपेन्द्र, वैरिसिंह, सियाक-II आदि राजाओं ने अपना जीवन पहले प्रतिहारों के अधीन बाद में राष्ट्रकूट शासक "दंतिदुर्ग'' ने इन्हें सामंत नियुक्त किया। इस वंश का संस्थापक "उपेंन्द्र कृष्णराज'' था, जिसकी राज0 धार थी। पहला स्वतंत्र शासक सिमुक/सियाक/श्री हर्श था, जिसने राष्ट्रकूटों की प्रभुता को अस्वीकार कर अपने वंश को स्वतंत्र घोषित कर दिया।

नवसाहसांकचरित (पद्मगुप्त) के अनुसार उसने हूणमण्डल के राजा चालुक्य नरेश अवनिवर्मन योगीराज-II राष्ट्रकूटों को भी पराजित किया। राष्ट्र नरेश ग्वोट्टिग को पराजित करने पर परमार राज्य दक्षिण में ताप्ती नदी तक विस्तृत हो गया। परन्तु वह चन्देल नरेश यशोवर्मन से युद्ध में हार गया। 912 ई. के लगभग उसकी मृत्यु हो गयी। उसके पश्चात् उसको पुत्र मुन्ज उसका उत्तराधिकारी हुआ। मुंज बड़ा पराक्रमीराजा हुआ

मुंज के कैथेय दानपत्र से ज्ञात होता है कि मुंज ने हूणों को हराया। उदयपुर अभिलेख के अनुसार मुंज ने कल्चुरी वंश के युवराज को हराकर त्रिपुरी पर अधिकार कर लिया कोथेय अभिलेख के अनुसार मुंज नाडाल के चौहान बलिराज पर आक्रमण कर आबू पर्वत के क्षेत्र पर अधिकार किया तथा गुजरात चालुक्य मूलराज-I को भी पराजित किया और उसने लाट प्रदेश पर भी विजय प्राप्त की।

अबुल-फजल के आइने-अकबरी में उल्लेख है कि कल्याणी के चालुक्य नरेश तेलप-II को मुंज ने छः बार पराजित किया किन्तु सातवीं बार बन्दी बना लिया गया और अपमान करके मार डाला। मुंज अत्यंत पराक्रमी कुशल प्रशासक तथा विद्याप्रेमी शासक था। मुंज की राजसभा में "नवसाहसांकचरित'' के लेखक पद्मगुप्त 'दशरूपक' के लेखक धनंजय, "यशोरूपावलोक'' के रचयिता धनिक जैसेधनंजय, हलादुध (अभिधानरत्नमाला) और अमित गतिजैसेकवि कलाकार मौजूद थे। वह स्थापत्य कला का प्रेमी तथा निर्माता भी था। उसका साम्राज्य विस्तार पूर्व में विदिशा से लेकर पश्चिम में साबरमती तक और उत्तर में सालाबार की दक्षिणी सीमा से लेकर ताप्ती नदी तक विस्तृत था।

राजा भोज (1007-1055 ई.) परमार वंश का सबसे प्रतापी राजा था। धार प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि भोज ने त्रिपुरी के कल्चुरि शासक गांगेयदेव को पराजित किया था। बुन्देलखण्ड पर अपने राज्य विस्तार के प्रयत्न में राजा भोज को अपने समकालीन चंदेल शासक विद्याधर से पराजित होना पड़ा।

परिजात मंजरी, उदयपुर प्रशस्ति और फलवान अभिलेख के अनुसार राजा भोज ने त्रिपुरी के कल्चुरि शासक गांगेयदेव तथा शाकंभरी के चौहान नरेश वीर्यराम को पराजित किया। भोज ने चालुक्यों की राज0 अन्हिलवाड़ पर आक्रमण करके उसे लूटा। कालांतर में कल्याणी के चालुक्य नरेश सोमेश्वर-I ने भोज को हराकर धार नगरी को लूटा, परन्तु भोज ने अपने खोये हुये प्रदेश पुनः प्राप्त कर लिये।

गुजरात के चालुक्य नरेश भीम व त्रिपुरी के कल्चुरि नरेश लक्ष्मी कर्ण ने संघ बनाकर भोज के राज्य पर आक्रमण किया। युद्ध के दौरान 1055 ई0 में भोज की एक रोग से मृत्यु हो गयी और मालवा पर कर्ण और भीम का अधिकार हो गया। राजा भोज ने प्राचीन राज0 उज्जैन को छोड़कर धारानगरी (धार) को राज0 बनाया।

राजाभोज अपनी विद्वता के कारण कविराज की उपाधि से विख्यात था। राजा भोज ने "सरस्वती कंठाभरण" नामक ग्रन्थ की रचना की। धार में एक प्रसिद्ध "सरस्वती मंदिर"का निर्माण करवाया, जो वर्तमान में भोजशाला के नाम से प्रसिद्ध है, इसे तोड़कर बाबर के समय "कमालूपासा मस्जिद" का निर्माण किया गया।
भोज ने भोपाल के प्रसिद्ध 'भोजनाल' का निर्माण किया गया।

भोज के पश्चात् उसका पुत्र "जयसिंह-I" शासक बना। जिसने कल्याणी के चालुक्य नरेश "सोमेश्वर-I" से संधि कर ली तथा उसकी एवं उसके पुत्र विक्रमादित्य की सहायता से कल्चुरि नरेश कर्ण तथा चालुक्य नरेश भीम को पराजित कर मालवा को मुक्त कर लिया।

परमार वंश का अंतिम नरेश महलक देव था, जिसने 1305 ई. में मालवा पर राज्य किया। महलक देव के शासनकाल में अलाउद्दीन खिलजी ने मालवा पर आक्रमण किया, जिसमें अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति "आइन-उल-मुल्क" ने महलक देव को पराजित कर मार डाला। इस प्रकार परमार वंश का अंत हुआ और मालवा पर मुस्लिम शासन की स्थापना हुयी।

परिमलगुप्त ने मुंज के पुत्र सिंधुराज के ऊपर "नवसाहसांकचरित " लिखी। यह सिंधुराज की उपाधि थी। परिमल इसका भी दरबारी रहा। अन्य उपाधियाँ श्री वल्लभ, पृथ्वी वल्लभ, अमोघवर्श आदि।

भोज ने आरा के पास भोजपुर नामक नगर बसाया, भोज की पूर्व राज0 उज्जैयिनी थी उसके बाद उसने धारा को अपनी राज0 बनाया। भोज ने हिन्दूशाही शासक आनंदपाल को महमूद गजनवी के विरूद्ध सहायता दी और उसके पुत्र त्रिलोचनपाल को अपने यहाँ शरण दी। 1043 ई. में उसने अन्य राजपूत शासकों के साथ मिलकर हाँसी, थानेश्वर, नगरकोट आदि स्थानों को मुसलमानों से छीनने में सफलता पायी।

भोज स्वयं एक योग्य विद्वान और विद्वानों का आश्रय दाता था। उसने समरांगणसूत्र (शिल्पशास्त्र), आयुर्वेद सर्वस्व, श्रंगारमंजरी (काव्य नाटक) युक्ति कल्पतरू (विधि ग्रंथ), तत्व प्रकाश (शैव ग्रंथ), श्रृंगार शतक, शब्दानुशासन, पतंजलि योग, सूत्र वृत्ति (योगशास्त्र) आदि लिखे।

राजा भोज ने धार में सरस्वती मंदिर में संस्कृत विद्यालय और मंदिर के समीप विजय स्तंभ बनवाया।

कल्चुरी वंश(550-1740 ई.):-

म0प्र0 में ही नहीं वरन् भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास में कल्चुरी नरेशों का स्थान कईदृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण हैं। सन् 550 ई0 से लेकर 1740 ई. तक लगभग बाहर सौ वर्षों तक की अवधि में कल्चुरी नरेशों ने भारत के उत्तर अथवा दक्षिण स्थित किसी न किसी प्रदेश में अपना राज्य चलाया। प्रमुख राज्यों के कल्चुरि निम्न हैं-

I. **माहिष्मति के कल्चुरी :-**कल्चुरियों की प्राचीन राज0 माहिस्मति थी, जहाँ से ये लोग 6 वीं शताब्दी ई0पू0 में शक्तिशाली हुये। इस वंश के सर्वप्रथम ज्ञात शासक कृष्णराज (550-575 ई0) तक के चाँदी के सिक्के बेसनगर तेवर तथा पट्टन से प्राप्त हुये है। इसके पश्चात् शंकरगढ़ तथा बुद्धराज आये। बुद्धराज को चालुक्य शासक मंगलेश से युद्ध करना पड़ा, जिससे वह पराजित हुआ। अंत में उसके राज्य का एक बड़ा भाग पुलकेशी (चालुक्य) द्वारा छीन लिया गया। इसके पश्चात् कल्चुरी वंश की शक्ति क्षीण हो गयी।

II. **त्रिपुरी के कल्चुरी :-**चालुक्यो से पराजित होने के पश्चात् बुद्धराज के वंशज माहिष्मती छोड़कर चेदि वंश की ओर भाग आये तथा त्रिपुरी में अपनी राजधानी स्थापित की। कुछ विद्वानों का मत है कि इस शाखा का संस्थापक "वामराजदेव" था जिसने सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कालिंजर को जीतकर अपनी राजधानी वहाँ स्थापित की।

शीघ्र ही उसने बघेलखण्ड को जीतकर उत्तर में गोमती नदी से दक्षिण में नर्मदा तक अपने साम्राज्य का विस्तार कर लिया। इसी समय कल्चुरियों की राजधानी कालिंजर से नर्मदा तट पर त्रिपुरी में स्थानांतरित की गयी। वामराज के पश्चात् अगले शासक शंकरगण ने राष्ट्रकूट राजाओं की अधीनता स्वीकार कर ली।

III. **रत्नपुर के कल्चुरी :-**नवीं शताब्दी ई0 के अंत में त्रिपुरी के कल्चुरियों ने दक्षिण कोसल में अपनी शाखा स्थापित करने का प्रयत्न किया। अभिलेखों से यह ज्ञात होता है कि कोक्कल-I के पुत्र शंकगण-II अर्थात् मुग्धतुग प्रसिद्ध धवल ने कोसल नरेश से पालि प्रदेश (बिलासपुर जिले के पालि नाम स्थान के आसपास का क्षेत्र) जीत लिया था इस समय यहाँ बाणवंशी विक्रमादित्य प्रथम राज्य का रहा था। इसके अथवा इसके उत्तराधिकारी से शंकगण ने यह प्रदेश जीता होगा।

शंकगण ने इस प्रदेश पर अपने छोटे भाई की नियुक्ति की, उसका नाम अज्ञात है, परन्तु अभिलेख यह उल्लेख करते हैं कि उसकी राजधानी तुम्माण (विलासपुर का आधुनिक तुमाण) थी। यहाँ कल्चुरियों ने दो-तीन पीढ़ियाँ बितायी होंगी। तदुपरांत वे स्वर्णपुर (आधुनिक सोनपुर) के सोमवंशी राजा द्वारा पराजित कर दिये गये।

कोक्कल-II के शासनकाल में कलिंगराज नामक कल्चुरी राजपुत्र ने अपने बाहुबल से दक्षिणी कोशल को जीतकर तुम्माण नगर में जहाँ उसके पूर्वजों ने राज किया था, अपनी राजधानी स्थापित की यह घटना 1000 ई0 के लगभग हुयी होगी।

IV. **रायपुर के कल्चुरी :-**रायपुरकी कल्चुरी शाखा की स्थापना 14 वीं शताब्दी ई0 के अंतिम चरण में हुयी। इस शाखा में हुये राजा ब्रम्हादेव के दो शिलालेख अभी तक प्राप्त हुये हैं, जिनमें से एक रायपुर से प्राप्त विक्रम संवत् 1470 (1415 ई0) का खलारी अभिलेख से विदित होता है कि ब्रम्हादेव के पूर्वज रामचंद्र ने कणि (नाग) वंश के राजा "श्रोणिगदेव" को पराजित किया था।

यह नागराजा कवर्था के नागवंश का था अथवा बस्तर का, यह कहना कठिन है। उपर्युक्त लेख से यह भी विदित होता है कि ब्रम्हादेव की राजधानी खल्वाटिका (आधुनिक खलारी रायपुर जिला) में थी।

कल्चुरी प्रशासन :-कल्चुरी प्रशासन प्रजाहितकारी था।

सैन्य व्यवथाः-राजा सर्वोच्च था।

विदेश विभाग :-इसका नाम "संधि विग्रहाधिकरण" था। संधि-सुकल-विग्रह-युद्ध इस विभाग के प्रमुख कार्य थे। इसके मुख्य अधिकारी को "महासन्धिविग्रहक" कहा जाता था।

पुलिस विभाग :-दण्ड पाशिक या दण्ड नायक के नेतृत्व में पुलिस विभाग था, राज्य का प्रशासनिक विभाजन इस प्रकार था।

जनपद :- देशों (जनपदों)-म0प्र0, वडहर, भट्टविस, भ्रमरवद्व, काकरय,तमनाल व विट्टरादेश का तथा मंडलों का उल्लेख कल्चुरि अभिलेखों में मिला है।

अधिकारी :-इसमें अमात्य एवं विभिन्न विभागों के अध्यक्ष शामिल है। महाध्यक्ष नामक अधिकारी सचिवालय का मुख्य अधिकारी होता था। महासेनापति अथवा सेनाध्यक्ष सैन्य प्रशासन के व दण्डपाणिक अथवा दण्डनायक आरक्षी (पुलिस) विभाग के प्रमुख, महाभांडगारिक, महाकोट्टपाल (दुर्ग या किले की रक्षा करने वाला) आदि अन्य विभागाध्यक्ष होते थे। अमात्य शक्तिशाली अधिकारी था।

मंत्रिपरिसद :-राजा की सलाह देने के लिए मंत्रिपरिषद थी यथापि राजा का निर्णय अंतिम होता था।

राजस्व व्ययस्था :-राजस्व विभाग का मुख्य अधिकारी "महाप्रमात" होता था।

कर :-नमक कर, खान कर (लोहे, खनिज आदि पर) वन चारागाह, बाग-बगीचा, आम, महुये आदि पर लगने वाले कर राजकीय आय के थे। मण्डी में सब्जी बेचने के लिए "पुगा" नामक परवाना (परमिट) लेना पड़ता था।

स्थानीय शासनः-गाँवों और नगरों में जनता द्वारा निर्वाचित 5 सदस्यीय "पंचकुल'' नामक परिषद स्थानीय शासन "महत्तर'' कहलाते थे। नगर के प्रमुख अधिकारी को "पुर प्रधान" ग्राम प्रमुख को ग्रामकूट या ग्राम भोगिक, कर वसूलने वाले को "शोल्किक" और जुर्माना वसूलने वाले को "दण्डपाशिक" कहा जाता था।

कल्चुरी संवत :-आभिर रानी ईश्वरसेन द्वारा 248-250 ई. में प्रचलित इस संवत् का प्रयोग कल्चुरियों ने बहुतायत किया।

मंदसौर का गुहिल वंश (1000-1050 ई.):-

मंदसौर के जीरठा नामक स्थान के पंचदेवरा मंदिर तथा छत्री (छतरी) पर उत्कीर्ण 6 अभिलेखें से यहाँ पर 10 वीं सदी ई0 में राज्य करते हुये एक मुहिल वंश का पता चलता है।

इन 6 अभिलेखें में एक विक्रम संवत 1053 का है तथा शेश वि0स0 1065 के है। इस अभिलेख में विग्रहपाल, वच्छराज, वैरिसिंह, लक्ष्मण आदि के नाम आये हैं। विग्रहपाल प्रथम ज्ञात शासक हैं। चहमानवंश के श्री अशोद्धय का भी उल्लेख है।

गुप्त वंश के वसंत की पुत्री "सर्वदेवी'' द्वारा स्तंभ निर्माण का भी उल्लेख है। इस गुहिल वंश का पूर्व तथा परवर्ती इतिहास क्या है तथा मेवाड़ के गुहिल वंश से उनका क्या संबंध था, इस विषय में इतिहास मौन है।

गौरी वंशः-

बाहरवीं शताब्दी के मध्य में गौरी वंश का उदय हुआ। गौरी साम्राज्य का आधार उत्तर-पश्चिम अफगानिस्तान था। मुहम्मद गौरी ने ग्वा. पर 1195-96 में आक्रमण किया और ग्वा. के लोहंगदेव (सल्लक्षण) को हराया। 1206 ई0 तक म0प्र0 में गौरियों के अधीन ग्वालियर ,कालिंजर तथा मालवा आ चुके थे।

जेजाकभुक्ति (बुन्देल खण्ड) का चंदेल वंशः-

9 वीं शदी के प्रारम्भ में बुन्देलखण्ड में स्थापित चंदेल राज्य का संस्थापक "नन्नुक'' था। इनकी राज0 महोबा थी। चन्देलों को राजपूतों के 36 राजवंशों में से एक माना गया है। लेखों में इन्हें चन्द्रात्रेय ऋशि का वंशज कहा गया है, जो अत्रि के पुत्र थे।

वाक्पतिः-नन्नुक के पश्चात् उसका पुत्र वाक्पति राजा बना। वाक्पति अपनी वीरता और बुद्धिमता के लिये प्रसिद्ध था और अपना राज्य विंध्य पर्वत तक विस्तृत कर लिया था। विंध्य पर्वत को उसका "आनंदधाम'' कहा गया है।

वाक्पति का पुत्र जयशक्ति/जेजा/जेजाक हुआ जिसके नाम पर चंदेलों का प्रदेश जेजाक मुक्ति (वर्तमान बुन्देलखण्ड) कहलाया। जयशक्ति के पश्चात् उसका भाई विजयशक्ति या विज्जक राजा बना जिसने आसपास के कुछ क्षेत्रों को जीत कर चंदेल साम्राज्य का विस्तार कर लिया था। उसके पश्चात् उसका पुत्र राहिल गद्दी पर बैठा, जिसने महोबा को जीत लिया था। राहिल के बाद उसका पुन हर्शदेव (900-825 ई) खजुराहों का शासक बना। हर्शदेव के बाद उसका पुत्र यशोवर्मन (925-950 ई) गद्दी पर बैठा था जिसने कन्नौज के प्रतिहारों को समाप्त किया और राष्ट्रकूटों से कालिंजर का दुर्ग जीता तथा मालवा के चेदि शासक को अपने अधीन कर लिया। यशोवर्मन (लक्ष्मणवर्मन) ने ही खजुराहों के प्रसिद्ध "विष्णु मंदिर'' का निर्माण करवाया। इस मंदिर में उसने "बैकुण्ठ की चतुर्भुज मूर्ति'' स्थापित करायी थी जिसे उसने प्रतिहार शासक देवपाल से प्राप्त किया था। यह मूर्ति मूलतः तिब्बत के राजा से कण्डा नरेश "साही'' ने प्राप्त कर देवपाल के पिता को सौंपी थी।

राजा धंग (950 -1002ई):-यशोवर्मन का पुत्र और उत्तराधिकारी "धंग'' चंदेल शासकों में सबसे महान हुआ। उसने कुछ समय पश्चात् अपने को प्रतिहारों की अधीनता से मुक्त घोशित कर दिया और उनके पूर्वी राज्य पर अधिकार कर लिया। कालिंजर पर अपना अधिकार सुदृढ़ कर उसे अपनी राजधानी बनाया। इसके बाद ग्वा0 पर अपना अधिकार जमाया। उसने पाल शासकों से "बनारस'' को छीन लिया तथा कुन्त कोसल और आन्ध्र के शासकों से युद्ध किये। उसने हिन्दूशाही शासक ''जयपाल'' को सुबुक्तगीन के विरूद्ध सहायता भेजी। धंग ने ललित कलाओं एवं विद्वानों को सरंक्षण दिया और बुन्देलखण्ड (खजुराहो) में अनेक मंदिरों का निर्माण कराया।

मध्य भारत के शासको में धंग एक यशस्वी शासक हुआ। धंग ने 100 वर्श से अधिक आयु होने पर स्वेच्छा से गंगा-यमुना के संगम में समाधि लेकर प्राण त्याग दिये थे। धंग एक विजेता के साथ ही उच्चकोटि का निर्माता भी था। उसके शासन काल में

निर्मित खजुराहों का विश्वविख्यात "पार्श्वनाथ'' और "विश्वनाथ'' मंदिर स्थापत्य कला के अनुपम उदा0 है।

राजा गंड (1002 -1017ई):-धंग का पुत्र गंड भी एक योग्य शासक हुआ। इसने अपने पुत्र विद्याधर के द्वारा कन्नौज के भगोड़े प्रतिहार शासक राज्यपाल (महमूद राजस्वी के विरूद्ध वह भाग खड़ा हुआ था) का वध कराया। गंड ने अपने शासनकाल के समय खजुराहों में "जगदम्बे" नामक वैश्णव मंदिर तथा "चित्रगुप्त नामक""सूर्य मंदिर" का निर्माण करवाया था।

विद्याधर (1017 -1029 ई.):- यही एक ऐसा भारतीय शासक था जिसने महमूद गजनवी की महत्वाकांक्षाओं का सफलता पूर्वक विरोध किया। मालवा के परमार शासक भोज व त्रिपुरी के कल्चुरी शासक गांगेयदव को भी हराकर अपने अधीन कर लिया।

विद्याधर ने न केवल महमूद गजनवी से अपने राज्य की सुरक्षा की, अपितु उसके विरूद्ध हिन्दू संघ को सहायता भी दी। इस संघ से भाग यदि प्रतिहार राजा राज्यपाल की उसने हत्या की। कंदरिया महादेव (खजुराहो) मंदिर का निर्माण किया। महमूद गजनबी ने संधि उपरांत विद्याधर को मित्र बनाकर 15 किले इनाम में दिये।

कीर्तिवर्मन (1060 -1100 ई.):-कृष्णा मित्र द्वारा रचित ''प्रबंध चन्द्रोदय" नामक नाटक से ज्ञात होता है कि उसने चंदेल शक्ति का पुनरूत्थान किया। इसने सोने के सिक्के भी चलवाये।

मदनवर्मन (1129 -1163 ई.):-यह एक पराक्रमी शासक था, मालवा में विदिशा के समीप चंदेलों के पुनः आधिपत्य की मदनवर्मन ने राहुलशर्मा नामक ब्राह्मण को 10 हल भूमि दान में दी थी। रीवा जिसे की त्योंधर तह0 के पनवार ग्राम में मदनवर्मन द्वारा जारी चाँदी के 48 सिक्के प्राप्त हुये हैं।

परमार्दिदेव (1165 -1200 ई.):- मदनवर्मन का का उत्तराधिकारी उसका पोता परमार्दिदेव (परिमल) हुआ। परिमर्दिदेव अंतिम स्वतंत्र चंदेल राजा था, जिसे पहले पृथ्वीराज चौहान ने हराया और अंततः कुतुबुद्दीन ऐबक ने उसे मारकर चन्देल राज्य और कालिंजर दुर्ग पर कब्जा कर लिया। आल्हा-ऊदल परमार्दिदेव के साले और योद्धा थे।

त्रैलोक्यवर्मन (1203 -1250 ई.):-अपने पिता परमार्दिदेव का यह उत्तराधिकारी हुआ, इसने तुर्की को पराजित कर कालिंजर दुर्ग को पुनः जीता और रीवा को जीता एवं "डाहल मण्डल (बघेलखण्ड)'' के एक भाग पर अधिकार कर लिया।

त्रैलोक्यवर्मन का पुत्र वीरवर्मन (1250-1286ई) उसका उत्तराधिकारी था। वीरवर्मन का उत्तराधिकारी भोगवर्मन था, जिसने अजयगढ़ के समीपस्थ क्षेत्रों में राज किया। चंदेल वंश का अंतिम ज्ञात शासक हम्मीरवर्मन (1288-1330 ई) था।

चरखारी शिलालेख में हम्मीरवर्मन को 'कालिंजराधिपति' कहा गया है। अजयगढ़ के सती शिलालेख में उसे शासक बताया गया है। कीरत सिंह चंदेलवंश का अंतिम ज्ञात शासक था।

देवगिरि का यादव वंशः-

11वीं -12वीं शताब्दी ई0 के मध्य देवगिरि (औरंगबाद जिले में स्थित आधुनिक दौलता बाद) के यादव शासकों में अपनी साम्राज्य का विस्तार कर विदर्भ के अधिकांश भाग पर अधिपत्य स्थापित कर लिया। देवगिरि के यादव वंश के प्रथम तीन शासक भिल्लम, जैतुगि तथा सिंघण ने मालवा पर आक्रमण कर समकालीन परमार शासक को पराजित किया।

बालाघाट जिले से प्राप्त एक अभिलेख के अध्ययन से कुछ विद्वानों का विश्वास है कि सिंघण का साम्राज्य यहाँ तक फैला हुआ था।

यादव वंश के चतुर्थ शासक "कृष्ण'' तथा पंचम शासक "महादेव'' के समय में भी मालवा पर आक्रमण किया गया।

रामचन्द्र के राजत्वकाल में यादव साम्राज्य का काफी विस्तार हुआ। बालाघट जिले में स्थित "लांजी'' से प्राप्त की गयी सीमा म0प्र0 के बालाघाट जिले तक विस्तृत हो गयी थी।

रामचन्द्र राज्यकाल के अंतिम भाम में उसे दिल्ली के शासक अलाउद्दीन खिलजी की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी थी।

कच्छपघात (कछवाहा)वंश(950-1128 ई.):-

अभिलेखों से कच्छपघात राजवंश का तीन शाखाओं का पता चलता है-

1. **ग्वालियर शाखाः-**इस वंश की ग्वालियर शाखा के संस्थापक राजा वज्रदामन का विक्रमसंवत् 1034 (977 ई) का जैनमूर्ति लेख सिहोनिया से प्राप्त हुआ। ग्वालियर के सास बहू मंदिर में दो प्रस्तरों पर उत्कीर्ण तथा ग्वा0 से प्राप्त तीसरे खण्डित अभिलेखों में इस वंश की वंशावली तथा उपलब्धियों का वर्णन है। इस वंश के प्रथम नरेश "लक्ष्मण" के उत्तराधिकारी "वज्रदामन" ने कन्नौज स्थापित किया।

   वज्रदामन का उत्तराधिकारी मंगसराज (955-1015ई0) तथा उसका उत्तराधिकारी कीर्तिराज (1015-1035ई0) राजा हुआ।सन् 1021 ई0 में ग्वा0 पर गजनी के महमूद का आक्रमण हुआ जिसमें ग्वा0 नरेश ने आत्मसमर्पण कर दिया। कीर्तिराज के पश्चात् क्रमशः मूलदेव (1035-1055ई0), देवपाल(1055-1075ई0), पद्मपाल, सूर्यपाल, महीपाल, रत्नपाल, भुवनपाल तथा मधुसूदन हुये। अंतिम नरेश मधुसूदन के बाद इस वंश के इतिहास का कुछ भी पता नहीं है।

2. **दुबकुण्ड शाखाः-**पहला शासक राजा युवराज था। ग्वा0 से 76 मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित दुबकुण्ड (प्राचीन चंडोभ) में दुबकुण्ड शाखा राज्य करती थी। दुबकुण्ड अभिलेख से ज्ञात होता है कि इस वंश में अर्जुन, उसका पुत्र अभिमन्यु, अभिमन्यु का पुत्र विजयपाल तथा विजयपाल का पुत्र विक्रम सिंह हुये।

3. **नरवर शाखाः-** कच्छपघाट राजवंश की नरवर शाखा (प्राचीन नलपुर) में राज्य करती थी। नरवर से प्राप्त ताम्रपत्र में गगनसिंह, शरद सिंह और वीरसिंह नरेश (अंतिम शासक) के राज्य करने का पता चलता है। इस वंश का संस्थापक वज्रदामन का पुत्र ''सुमित्र" था।

तोमर वंशः-

मुस्लिम सत्ता के डंवाडोल होने पर वीर सिंह देव ने ग्वा0 में तोमर राज्य की नींव डाली। इसके एक राजा डुंगरेन्द्र सिंह ने जैन धर्म को राजकीय संरक्षण दिया। इसी का वंशज मानसिंह मृगनयनों से प्रेम के कारण चर्चित है। इसे लोदी शासकों से निरंतर युद्ध करना पड़ा। इसके पुत्र विक्रमादित्य ने इब्राहिम लोदी की तरह से पानीपत के प्रथम युद्ध (1526 ई0) में भाग लिया था। विक्रमादित्य से ही इब्राहिम लोदी ने ग्वालियर का किला छीना था।

- **जीरण अभिलेखः-** (11 वीं शदी) इसमें मंदसौर के गुहील शासकों का उल्लेख है।
- **रवोह एवं उचहरा अभिलेख :-** सतना के आस-पास के उच्चकल्प शासकों का उल्लेखं
- **बल्ख के महाराजाओं के अभिलेख :-** इंदौर, बाघ, सिरपुर के अभिलेखों में बलव के महाराजाओं का उल्लेख है।

मध्य कालीन इतिहास (1206 ई0-1707 ई0)

भारत में मुहम्मद गौरी ने इस्लामिक राज्य की स्थापना की लेकिन सल्तनत का प्रारभ 'ऐबक' से शुरू होता है जो दासवंश का प्रारंभ कर्ता भी था।

सल्तनत काल (1206-1526 ई0):-

1) गुलाम वंश (1206-1290ई0)
2) खिलजी वंश (1290-1320ई0)
3) तुगलक वंश (1320-1414ई0)
4) सैयद वंश (1414-1451ई0)
5) लोदी वंश (1451-1526ई0)

1.गुलाम वंश (1206-1290ई0)

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210ई0) :-यह गुलाम वंश का संस्थापक था। ऐबक ने ही पहले गौरी के भारतीय प्रतिनिधि के रूप में और बाद में सल्तनत के पहले शासक के रूप में भारतीय राज्यों को जीता। म0प्र0 में भी गौरी और ऐबक ने हमले बोले। गौरी ने ग्वा0 के लोहांगदेव (सल्लक्षण) को हराया था। ऐबक ने अंतिम चंदेल राजा परिमार्दिदेव (परिमल) को 1202 ई0 में हराकर कालिंजर जीता।

इल्तुतमिश (1210-1236ई0) :-कुतुबुद्दीन ऐबक का गुलाम और दामाद था। इस वंश का सबसे प्रतापी सुल्तान हुआ जिसने 1228 ई0 में सिंध विजय के पश्चात् म0प्र0

के माण्डू, ग्वा0, मालवा और उज्जैन को भी जीत लिया और नर्मदा नदी तक अपने साम्राज्य का विस्तार कर लिया। उज्जैन में महाकालेश्वर मंदिर को लूटा।

2.खिलजी वंश (1290-1320ई0) :-

खिलजी वंश के संस्थापक जलालुद्दीन खिलजी (1290-96ई0) ने माण्डू को लूटा।फरिश्ता के अनुसार जलालुद्दीन फिरोजशाह खिलजी ने 1295 ई0 में ग्वा0 में शिकार खेलने आया व यात्रियों के लिये एक गुंबदाकार विश्राम गृह बनवाया।

बढ़ैया खेड़े के समीप ब्रह्म गाँव में सतीचौरा लेख से ज्ञात होता हैं कि अलाउद्दीन खिलजी ने कालिंजर दुर्ग (बंदा, बुन्देलखण्ड) पर 1308-09 के बीच अधिकार किया। उज्जैन और विदिशा के मंदिरों को लूटा, मानिकपुर के हाकिम के रूप में। इसके शासनकाल में अधिकांश म0प्र0 जिनमें भिलसा, चंदेरी, धार, उज्जैन, मांडू जैसे महत्वपूर्ण स्थान थे, जो केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त प्रांतपतियों के सीधे नियंत्रण के थे। इसने 1305 ई0 में मालवा के शासक महलक देव को पराजित कर वहाँ मुसलमानों का आधिपत्य स्थापित किया। महलकदेव को उसने अपने सेनापति "एन-उल-मुल्क" के माध्यम से हराया। अलाउद्दीन (1296-1316ई0)तक था।

3.तुगलक वंश (1320-1440ई0) :-

(गाजीमलिक) गयासुद्दीन तुगलक (संस्थापक) के समय (1320-1325ई0) दमोह जिले के बाटियागढ़ शिलालेख (हिजरी सन् 725 का लेख या 1324 ई0 का लेख) से ज्ञात होता है कि गयासुद्दीन ने यहाँ कोई सूबेदार नियुक्त किया था, जिसने यहाँ एक महल बनवाया। मुहम्मद बिन तुगलक (जूना खाँ 1325 -51ई0) दिल्ली मुसलमानों में सबसे योग्य और विद्वान पुरूष था।

इस समय तक तुगलकों के अधीन म0प्र0 का अधिकांश भाग विंध्यप्रदेश, मालवा, बुन्देलखण्ड तक था। चंदेरी व मालवा में पूर्ण आधिपत्य स्थापित किया। बाटियागढ़ में प्राणियों के लिये गो-मठ, एक बाबड़ी और एक बगीचा मुहम्मद विन तुगलक ने बनवाया था(संस्कृत अभिलेख)। सुल्तान फिरोजशाह तुगलक (1352-89ई0) के राज्य का उल्लेख सागर जिले के दुलचीपुर ग्राम के स्मारक पत्थर पर है। नासिरूद्दीन महमूद (इल्तुतमिश का पुत्र) के समय मालवा का सूबेदार दिलावर खाँ गौरी स्वतंत्र हो गया तथा चंदेरी पर चढ़ाई करके बुन्देलखण्ड के कई भाग अपने अधीन कर लिये। ग्वा. में नरसिंहराज राजा बन बैठा, जिससे म0प्र0 के अधिकांश भाग पर से दिल्ली के शासकों का आधिपत्य समाप्त हो गया।

4.सैयद वंश (1414-1451ई0) :-

सुल्तान (पंजाब) का राज्यपाल नियुक्त किया था। इस वंश का म0प्र0 पर कोई असर नहीं रहा।

5.लोदी वंश (1451-1526ई0) :-

संस्थापक- बहलोल लोदी

लोदीवंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी (1506-1526ई0) के समय मालवा में महमूद खिलजी-II ने स्वतंत्र सत्ता स्थापित की लेकिन उस पर प्रभाव प्रधानमंत्री मेदिनीराय का था, जो राणा सांगा के अधीन चंदेरी का शासक भी था।

माण्डू के शासक :-1310 ई0 में अलाउद्दीन खिलजी ने मालवा को जीत लिया और दिलावर खाँ को मालवा का सूबेदार बनाया। दिलावर खाँ ने (1401ई0) मालवा को स्वतंत्र घोषित कर यहाँ का स्वंतत्र शासक बना। दिलावर खाँ का पुत्र अलप खाँ "होशंगशाह" की उपाधि धारण कर 1405 ई. में मालवा का सुल्तान बना। होंशगशाह (1908-35) ने मालवा की राज0 धार से माण्डू स्थानांतरित की। 1435 में उसने होशंगाबाद नगर की स्थापना की। महमूद खिलजी (1436-1468ई0) ने मालवा में खिलजी वंश की स्थापना की। महमूद खिलजी ने माण्डू में सात मंजिला महल का निर्माण करवाया। नासिरूद्दीन शाह भी माण्डू का शासक रहा है।

बघेल वंश :-

बघेल राज्यक्षेत्र का नाम भथा था, जो वर्तमान रीवा हैं बघेलखण्ड क्षेत्र में बघेल राजपूतों ने अपनी सत्ता स्थापित की। इस वंश का पहला ज्ञात शासक धवल था। कर्णबघेल के शासन काल में 1299 ई0 में अलाउद्दीन खिलजी ने गुजरात पर आक्रमण किया। तत्पश्चात् कर्ण बघेल के साथ कुछ राजपूत कालिंजर क्षेत्र भाग कर आये।

राजा वीर सिंह की मित्रता दिल्ली के सुल्तान सिकन्दर लोदी से थी। वीर सिंह देव ने कमारों से बाँधवगढ़ का किला छीनकर शहडोल जिले में अधिकार कर रतनपुर के कल्चुरि शासक पर कर लगाया। इसके शासनकाल में बघेल वंश का विस्तार हुआ।

राजावीरमान (1540-55ई0) ने हुमायूँ की चौसा पराजय के बाद उसकी सहायता की थी। 1564 ई0 में अकबर के दूत जलाल खाँ ने तानसेन को रामचन्द्र से लेकर अकबर के दरबार में पहुँचाया था। कालिंजर का किला जो रामचंद्र के अधीन था, उसे 1 जुलाई 1569 में मुगल शासक अकबर ने अपने अधीन कर लिया।

भथा राज्य या बघेल वंश (विंध्य प्रदेश) के अंतिम शासक मार्तण्ड सिंह थे। जिन्होंने इसका विलय 1947 में भारतीय संघ में किया। मार्तण्ड सिंह रीवा से सांसद भी चुने गये। रीवा के जंगलों से सफेद शेर पकड़ने का पहला श्रेय मार्तण्ड को है।

गोंड राजवंश (गोंडवाना) :-

ऐसा अनुमान है कि खिलजियों के पतन के पश्चात् गोंड जनजाति ने इस वंश की स्थापना की। 14 वीं शताब्दी के दौरान यादव राव ने गढ़ कटंगा (गढ़मण्डला) में इस वंश की स्थापना की।

उन प्रदेशों को, जिन पर मुगलों का अधिकार नहीं था, मुगल उन्हें 'गोंडवाला' कहते थे। आइन-ए-अकबरी (अबुल फजल) के अनुसार गोंडवाना राज्य का विस्तार था- पूर्व में रतनपुर का राज्य पश्चिम में मालवा, उत्तर में पन्ना, दक्षिण में दक्कन। इसमें दमोह तथा बुन्देल खण्ड का भाग भी शामिल था।
गोंड राजा संग्राम शाह के समय उत्तरी गोंडवाना को वास्तविक महानता तथा ख्याति प्राप्त हुयी। 148 ई0 में संग्राह शाह के गोंड शासक बनने के समय गोंड वंश का प्रभुत्व जबलपुर तथा मण्डला के आसपास के क्षेत्रों तक था।

संग्राह शाह ने अपने राज्य को 52 गढ़ों तक फैलाया, जिसके अंतर्गत मुख्यतः मण्डला, जबलपुर, दमोह सागर सिवनी बालाघाट, छिंदवाड़ा, होशंगाबाद, नरसिंहपुर, पन्ना, रायसेन, भोपाल, विदिशा, सतपुड़ा क्षेत्र आदि आते थें। दमोह जिले के थर्राक में प्राप्त सती अभिलेख के अनुसार संग्राम शाह का प्रभुत्व उसकी राजधानी गढ़ा से 50 मील उत्तर तक फैला था, उसने स्वर्ण, रजत मुद्रायें चलायी थी। संग्राम शाह के पुत्र दलपत शाह का विवाह महोबा के चंदेल वंश की राजकुमारी दुर्गावती के साथ हुआ। दलपत शाह की मृत्यु (1541) के बाद रानी दुर्गावती ने अपने अल्पायु पुत्र "वीरनारायण" के संरक्षिका बनकर गढ़ मण्डल का शासन संभाला। दुर्गावती ने अपनी कार्यकुशलता से सिंगारगढ़ के लिये (दमोह) की कीर्ति पताका को चारों विस्तारित किया। अबुल फजल ने आइन-ए-अकबरी में अंकित किया है किं गोंडवाला इतना समृद्धशाली था कि प्रजा लगान की अदायगी स्वर्ण मुद्राओं व हाथियों में करती थीं।
अकबरनामा (अबुल फजल) एवं तबकात-ए-अकबरी (निजामुद्दीन अहमद) में रानी के अप्रतिम सौन्दर्य और आकर्शण का उल्लेख है। रानी दुर्गावती ने मालवा के बाजबहादुर को जंग-ए-मैदान में बुरी तरह पछाड़ा।

(प्रयागराज) कहा-मानिकपुर (प्रतापगढ़) के मुगल सेनापति सूबेदार आसफ खाँ ने 1564 ई0 में सिंगारगढ़ के किले का घेराव किया। जबरदस्त जंग के बाद अपनी पराजय सुनिश्चित देख नारी ने कटार घोपकर आत्म - हत्या कर ली। रानी दुर्गावती की समाधि बरेला/बारहाग्राम (जबलपुर) में बनी है। इसी स्थान पर रानी परलोग सिधारी थीं। समाधिका अनावरण 24 जून 1964 को प्रदेश के तत्कालीन मुख्मंत्री पं0 द्वारिका प्रसाद मिश्र के कर कमलों से किया गया।

गोंडवाना की लड़ाकिनी, संग्राम की कीर्ति, दुर्गावती के साहस व बलिदान की गाथायें, में उन्हें"फ्रांस की जॉन ऑफ आर्क" व "झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई" के समकक्ष स्थान दिलाती है।

अकबर ने विजय उपरांत गोंडवाना राज्य को गोंड वंश के ही चंद्रशाह (दलपत शाह के भाई) को अपनी अधीनता में सौंप दिया था। प्रेम नारायण के समय गोंडवाना की राजधानी चौरागढ़ थी।

धरमत के युद्ध (15 अप्रैल 1658) में (उज्जैन के समीप) औरंगजेब ने शाहजादा दारा (शाहजहॉ का पुत्र) को पराजित कर बादशाहत प्राप्त की थी।

खानदेश :-

वर्तमान निमाड़, दक्षिणी मालवा में विस्तृत। दक्षिण का प्रवेश द्वार था। यहाँ फारूकी वंश (दाउद, मीरन बहादुर) ने शासन किया। अकबर की अंतिम विजय खानदेश मानी जाती है। (1601 ई0) दाउद खानदेश का संस्थापक माना जाता है।

मुगलकाल :-

संस्थापक - बाबर (1526-1530 ई0)

पानीपत का प्रथम युद्ध (1526 ई0) :-बाबर ने इब्राहिम लोदी को हराकर मुगल साम्राज्य की नींब डाली। उसने ग्वालियर चंदेरी व रायसेन पर भी अधिकार कर लिया। मंदसौरे के युद्ध में गुजरात के बहादुर शाह जफर को हराकर पश्चिमी म0प्र0 पर भी शासन स्थापित किया। मंदसौर, उज्जैन, धार, माण्डू उसके अधीन थे।

बाद में शेरशाह सूरी ने मालवा पर अपना अधिकार कर शुजात खाँ को यहाँ का सूबेदार बनाया। शेरशाह की मृत्यु के बाद मालवा स्वतंत्र हो गया, पर कुछ समय बाद सम्राट अकबर ने बाजबहादुर से मालवा छीन लिया।

चंदेरी का युद्ध (1528 ई0) :-इसमें चंदेरी के शासक मेदिनीराय को बाबर ने पराजित किया।
हुमायूँ (1530-1540, दूसरा कार्यकाल-1555-56.ई) के साथ गुजरात का शासक स्वतंत्र हो गया और मालवा पर अधिकार कर लिया, परन्तु हुमायूँ ने उसे हराकर पुनः मालवा को मुगल शासन के अधीन कर लिया।

अकबर (1556-1605) ने मालवा के शासक बाज बहादुर ने खानदेश जिसकी राजधानी बुरहानपुर थी, के :ासक मीरन बहादुर को पराजित कर मुगल साम्राजय में उसका विलय किया। अकबर ने 1601 में असीरगढ़ के किले (बुरहानपुर) को जीता जो उसका अंतिम विजय अभियान था।

मालवा के सुल्तानों ने माण्डू (धार) में अनेक प्रख्यात इमारतों का निर्माण कराया, जिनमें जहाज महल (ग्यासुद्दीन खिलजी) हिण्डोला महल, रूपमती का महल, जामा मस्जिद और होशंगशाह का मकबरा विशेश उल्लेखनीय हैं।

बुंदेलखण्ड-मुगल संबंध-

बुंदेल शासक सोहनपाल ने खंगारो की :क्ति का दमन कर बुन्देला राज्य की नींव डाली। इनकी राजधानी ओरछा थी।
वीरसिंह देव का दोस्ताना संबंध मुगल राजकुमार सलीम (अकबर का पुत्र, जहाँगीर) से था। सलीम के कहने पर ही वीरसिंह ने अबुल फजल की हत्या कर दी थी। सलीम जब जहांगीर के नाम से मुगल सम्राट बना तो उसने वीरसिंह देव को ओरछा का नरेश बनाया।

1612 ई0 में रामचन्द्र की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र "जुझार सिंह" गद्दी पर बैठा। विक्रम संवत् 1690 ई0 में जुझार सिंह ने गोंड राजा प्रेमशाह को मार डाला और उसका किला चौरागढ़ अपने राज्य में मिला लिया। जुझार सिंह ने शाहजहाँ के समय विद्रोह कर दिया, फलतः शाहजहाँ ने ओरछा पर आक्रमण कर दिया।

बुन्देला वंश :-

14 वीं शताब्दी में बुंदेला वंश का उदय हुआ, इस वंश के रूद्रप्रताप बुन्देला ने 1531 ई0 में ओरछा को अपनी राजधानी बनाया। इस वंश का प्रसिद्ध राजा छत्रसाल (चंपतराय का पुत्र) था, जिसने औरंगजेब के विरूद्ध विद्रोह जारी रखा। छत्रसाल ने मराठों से संधि की । अंततः औरंगजेब ने 1707 में छत्रसाल से सन्धि की और उसे राजा की उपाधि दी। इस प्रकार छत्रसाल स्वतंत्र शासक बना। बाद में उसने ओरछा को राजधानी बनाया। परन्तु बाद में मुगल दरबार में चार हजार का मनसब पद प्राप्त किया। बुन्देला वंश के शासनकाल में ओरछा में स्थापत्य कला युक्त भवनों एवं मंदिरों का निर्माण किया गया।

तोमर राजवंश :-

14 वीं सदी ई0 के उत्तरार्द्ध में भारत पर तैमूर के आक्रमण तथा उसके परिणामस्वरूप मुस्लिम सत्ता डांवाडोल होने की परिस्थिति का लाभ उठाकर ग्वालियर में तोमर वंश की स्थापना हुयी। ग्वालियर पर इस वंश का प्रभुत्व 16 वीं सदी ई0 के पूर्वार्द्ध तक रहा। तोमर वंश का संस्थापक "वीरसिंह देव" था। जिसके उत्तराधिकारी क्रमशः उद्धरदेव तथा विक्रमदेव हुये। विक्रमदेव के राज्यकाल में 1402 ई0 में नासिरूद्दीन मुहम्मद तुगलक के सेनापति मल्लु इकबाल खाँ ने ग्वालियर पर आक्रमण कर किले को जीतना चाहा, परन्तु प्रयत्न असफल हुआ। अगले वर्ष उसने फिर से आक्रमण किया तथा विक्रमदेव को धौलपुर के निकट पराजित किया।

1404-05 ई0 में इकबान खाँ को विक्रमदेव के नेतृत्व में राजपूतों की सेना का सामना करना पड़ा, जिसमें राजपूतों की पराजय हुयी। 1416 ई0 में खिज्र खाँ ने विक्रमदेव से कर वसूल करने के लिये अपनी वजीर मालिक ताज-उल-मुल्क को भेजा।

विक्रमदेव का उत्तराधिकारी डुंगरेन्द्र सिंह 1424 ई0 में गद्दी पर बैठा।

अपने राज्यकाल के प्रारम्भ से ही उसे मुसलमानों से लोहा लेना पड़ा। उसके राज्यकाल के प्रारम्भ से ही उसे मुसलमानों से लोहा लेना पड़ा। उसके राज्यकाल के प्रथक वर्ष में मालवा के शासक हुशंगशाह से पीछा छुड़ाने के लिये डुंगरेन्द्र सिंह को जौनपुर के शासक मुबारक शाह की सहायता लेनी पड़ी और उसे कर भी देना पड़ा, परन्तु उसने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बराबर बनाये रखा। दिल्ली के सुल्तान ने उससे कर वसूल करने के उद्देश्य से उसके विरूद्ध 1427,1428,1429 तथा 1432 ई0 में सेना भेजी, परन्तु इन सभी प्रयत्नों को उसने विफल कर दिया।

1438 ई0 में डुंगरेन्द्र सिंह नरवर के गढ़ को घेर लिया जो कुछ समय मालवा के सुल्तान के अधीन हो गया था। यद्यपि इस प्रयास में डुंगरेन्द्र सिंह असफल रहा, परन्तु भविय में नरवर तोमरों के अधीन अवश्य हो गया।

1455 ई0 के लगभग डुंगरेन्द्र सिंह का उत्तराधिकारी कीर्तिसिंह गद्दी पर बैठा। अपने 25 वर्श के राज्य काल के दौरान इन्हें मुस्लिमों में अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिये कभी जौनपुर तो कभी दिल्ली के मुस्लिम शासक को मित्र बनाना पड़ा।

तोमर वंश का सबसे प्रतापी राजा मानसिंह (1486-1517 ई0) हुआ। दिल्ली के लोदी शासक बहलोल लोदी सिकन्दर लोदी व इब्राहिम लोदी से टक्कर लेनी पड़ी।

मानसिंह द्वारा रचित "मानकौतूहल'' संगीत का प्रमुख ग्रंथ है। ग्वालियर किले में "मानमंदिर '' तथा "गूजरी महल'' का निर्माण कराया जो हिन्दू स्थापत्य कला का अप्रतिम उदाहरण है।

1517 ई0 में इब्राहिम लोदी ने ग्वालियर पर आक्रमण जिसे इब्राहिम लोदी ने पराजित कर ग्वालियर का किला जीत लिया तथा ग्वालियर लोदियों के अधीन हो गया।

आधुनिक काल के राजवंश :-

1732 ई0 तक म0प्र0 में निम्न पाँच मराठा राज्यों की नीव पड़ चुकी थी।

1. इन्दौर -होलकर राजवंश
2. धार - आनन्द राव पवार वंश
3. छेवास, बडी पांती - तुकोजी राव पवार वंश
4. देवास , छोटी पांती - जीवाजी राव वंश
5. ग्वालियर - सिंधिया वंश

(1) होलकर वंश

मुगलों के पतन के बाद मालवा पर होलकर वंश का राज स्थापित हुआ। वस्तुतः होल्करों को मालवा मराठा साम्राज्य के पांच सरदारों में विभाजिनीकरण स्वरूप मिला था।

- 1727 में मल्हारराव होल्कर को मालवा के 5 महलों की सनद पेशवा से मिली थी और राज्य के इस भाग में मराठा राज शुरू हुआ।
  $(16\,set) \rightarrow 1729$ में धार-देवास के पवार राज को भी सनद मिली लेकिन 1730 मे होल्कर को क्षेत्र का सवोच्च शासक स्वीकारा।
- पेशवा बाजीराव ने 29 जुलाई 1732 में मालवा सूवा होल्कर ,सिंधिया और पवार के बीच विभक्त कर दिया।
- 1761 के पानीपत के तृतीय युद्ध में हारकर लौटे मल्हार राव होल्कर की मालवा में स्थिति अधिक सुदृढ़ हुई। 26 मई 1766 को उसकी मृत्यु (जिला भिण्ड) के बाद मालेराव होल्कर राजा बना लेकिन 1 वर्ष बाद ही चल बसा।
  तथा उसकी माता अहिल्याबाई ने स्वयं शासन (27 मार्च 1767) संभालकर और 1797 तक अपने 30 वर्षीय शासनकाल में इतने लोकोपकारी कार्य किये कि जनता के मध्य वह लोकप्रिय हो गयी। उन्हें तुकोजी होल्कर नामक सेनापति ने शासनकार्य में महत्वपूर्ण सहयोग दिया। माता ने राज्य भर में कुए, बाबड़ियाँ, प्याऊ, धर्मशालाएँ आदि अधिक संख्या में बनवाएँ। अत्यन्तः धार्मिक प्रवृति की माता अहिल्या देवी भगवान शंकर की उपासिका थी और धार्मिक रूप से अत्यन्त सहिष्णु थी। उनके दरवार में सबको न्याय मिलता था। कहते है कि उन्होने अपने एक प्रिय पुत्र को न्याय के लिए हाथी के पैरो के तले कुचलवा देने का निर्णय दिया था। 1797 में माता अहिल्या ने अंतिम सांस ली।
- अहिल्याबाई की मृत्यु पश्चात् तुकोजी राव होल्कर ने प्रशासन कार्य संभाला, किन्तु 15 अगस्त 1797 को उनकी भी मृत्यु हो गई। इसके पश्चात् काशीराव ,यशवंदुराव प्रथम ,तुलसाबाई तीनों ने मल्हारराव होल्कर नाम पर शासन किया।

अंतिम राजा तुकोजी तृतीय के समय इस राज्य का विलय मध्य भारत प्रांत में हुआ।

- होल्कर वंश (तुकोजीराव होल्कर द्वितीय) ने 1857 के गदर में क्रांतिकारियों का गुप्त समर्थन किया था।

(होलकर वंश) महत्वपूर्ण तथ्य

- देवी अहिल्याबाई का शासन काल 1767-1797 राजधानी महेश्वर (राजवाड़ा के अतिरिक्त दूसरी)
- 1770 में इन्द्रपुर (इन्दौर) की स्थापना की।
- राजधानी इन्दौर स्थापित की पुनः (3नवंबर 1818)
- गदर-1857 को समर्थन देने वाले होल्कर राजा थे तुकोजीराव द्वितीय।
- होल्कर अंतिम् मराठा शक्ति थे जो ब्रिटिश सत्ता से परास्त हुए।
- वेलेजली के समय 1805 में राजपुरघाट की संधि हुई थी। इसमें यशवंत राव होल्कर को चंबल का उत्तरी भाग एवं बुंदेलखण्ड छोड़ना पड़ा।
- होल्कर रियासत ब्रिटिश सत्ता के अधीन 6 जनवरी 1818 को हुई (सहायक संधि द्वारा)
- ब्रिटिश सत्ता के अधीन होल्कर राज्य को प्रथम दीवान तात्या जोग थे।
- इन्दौर के रेसीडेंसी एरिया और इन्दौर के प्रथम औद्योगिक विकास का श्रेय महाराजा तुकोजीराव होल्कर (1852-86) को है।
- तुकोजीराव के समय ही इन्दौर में रेलवे का परिचालन 1875 में शुरू हुआ।

सिंधिया वंश

- 2 नवंबर मालवा का एक भाग सिंधिया को मिला था, उसके शासक राणोजी सिंधिया जी थे।
- ग्वालियर में सिंधिया वंश के संस्थापक राणोजी सिंधिया।
- 1729 ई. में अमझेरा का युद्ध में राणोजी ने वीरता का प्रदर्शन किया था तथा पुणे दरबार से राणोजी को होल्कर वंश के समान भागीदारी दी गई, जिससे उन्हें उज्जैन, शाजापुर और शुजावलपुर (शुजालपुर) आदि क्षेत्र प्राप्त हुए।
- 1766 ई0 में उत्तर भारत की आय के बँटवारों से पेशवा सरकार को 46% तथा होल्कर एवं सिंधिया प्रत्येक को 21% भाग प्राप्त होता था। वर्ष 1795 में राणोजी की मृत्यु के पश्चात् सिंधिया वंश का सबसे प्रतापी राजा महादजी सिंधिया सत्तासीन हुए।
- 1761 में पानीपत युद्ध से भागकर आये महादजी सिंधिया ने लोकेन्द्र सिह जाट से ग्वालियर का किला छीना(1765)।
- महादजी वीर योद्धा और प्रशासक थे।
- महादजी ने ग्वालियर साम्राज्य की स्थापना की उन्होंने दिल्ली के मुगल सम्राट पद पर शाह आलम को बैठाया और उस पर अपना नियंत्रण रखा। शाहआलम ने महादजी को अपना वकील (PM) बनाया।
- 1794 में दौलत राव सिंधिया महादजी के उत्तराधिकारी बने दौलत राव ने उज्जैन के स्थान पर लश्कर (ग्वालियर) को अपनी राजधानी 1810 में बनाया इसके पश्चात् जाकोजी, जयाजीराव, माधव राव प्रथम और जीवाजीराव शासक बने। जीवाजी राव के समय ही मध्य भारत के राजाओं का एक संघ बना, जिसका नाम मध्य भारत देकर भारतीय संघ में उसके विलय का प्रस्ताव हुआ। मध्य भारत के पहले राज प्रमुख के रूप में जीवाजी राव सिंधिया ने 18 मई 1948 को शपथ ली।
- जीवाजी राव के वयस्क होने तक रियासत का प्रशासन चलाने के लिए महारानी की अध्यक्षता में कौंसिल ऑफ एंजेसी का गठन किया गया था।
- महाराजा जीवाजी राव सिंधिया का विवाह राजमाता विजयाराजे से हुआ था। विजयाराजे का जन्म मध्यप्रदेश के सागर जिले में हुआ था।
- मृदुला सिन्हा ने "एक रानी ऐसी भी" के नाम से राजमाता विजयाराजे की जीवनी लिखी है।
- मई 1948 को पं0 जवाहरलाल नेहरू ने मध्य भारत राज्य के प्रथम राज प्रमुख के रूप में जीवाजी राव सिंधिया को शपथ दिलाई थी।
- महादजी शिंदे ने 1794 ई0 में अपनी मृत्यु तक अपने शौर्य के बल पर ग्वालियर राज्य की सीमाओं का विस्तार किया। उत्तर में यमुना नदी से लेकर पश्चिम

में राजपूताना, दशपुर अंचल तथा निमाड़ क्षेत्र तक यह राज्य विस्तृत हो गया था।

महत्वपूर्ण तथ्य (सिंधिया वंश)

❖ विद्रोह 1857 के समय ग्वालियर महाराजा जीवजीराव थे।

❖ जीवाजीराव ने विद्रोहियों के स्थान पर अंगेजों का समर्थन किया था।

❖ सिंधिया वंश के अंतिम शासकों ने लन्दनै से ग्वालियर पर शासन किया।

❖ अंतिम सिंधिया महाराजा जार्ज जीवाजीराव ने ग्वालियर रियासत का विलय (1948) भारत संघ में किया गया था।

❖ जार्ज जीवाजी राव सिंधिया 18 मई 1948 को मध्य भारत प्रान्त के राजप्रमुख बनाए गये थे। आपने राजप्रमुख के रूप में 1956 तक शासन किया।

1857 में मध्यप्रदेश के नाम :-

विद्रोही	विद्रोह से जुड़े उल्लेखनीय तथ्य
(1) शेख रमजान (सागर)-	इनके नेतृत्व में अरबरोही सैन्य टुकड़ीने सागर में विद्रो किया।
(2)शंकरशाह (शाकिरशाह)-	इन्होंने तथा इनके पुत्र ने गढ़ा -मण्डला की स्वतंत्रता के लिए हथियार उठाया था इन्हें तोप से उड़ा दिया गया।
(3)राजा ठाकुर प्रसाद-	राघवगढ़ के किशोर राजा ने विद्रोह किया था। आजीवन कारावास हुआ।